मई-2014 ◆ वर्ष 2 ◆ अंक 12 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मई-२०१४

रङ्गभेद बेकार की बातें
दयानन्द का है संदेश
है मानस की जात हित
चाहे देश-विदेश

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० २६

मसालों का अम्बार, एम.डी.एच. परिवार।
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
Pav Bhaji masala
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ
महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग
नवनीत आर्य

व्यवस्थापक
सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - ५००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११
वैशाख शुक्ल अष्टमी
विक्रम संवत्
२०७१
दयानन्दाब्द
१९०

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

Every day is mother's day

दिवेर का निर्णायक युद्ध

May - 2014

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २२

हलचल २३

०४ वेद सुधा
०८ अपने बुरे दिनों को याद रखो
१० वेदों में मेरा इतिहास
१२ नवयुग की आहट
१५ सबसे बड़ा है दरजा माँ का
१६ महत्वपूर्ण २१ सुझाव
१८ 'वेद और सत्यार्थ प्रकाश'
२१ अविद्या और विद्या
२४ आचार परमो धर्मः
२६ नवलखा महल एक परिचय
२७ बाल-विवाह निषेध
२८ विटामिन-डी की कमी जानलेवा
३० कथा सरित

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - २ अंक - १२

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ९३१४५३५३७९, ९८२९०९३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

स्वराज्य बने सुराज्य

ओ३म् इत्था हि सोम इन्मदे ब्रह्मा चकार वर्धनम्।
शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निः शशा अहिमर्चन्ननु स्वराज्यम्।। ऋग्वेदः मण्डल १, सूक्त ८०, मंत्र १

शब्दार्थः- इत्था- इस प्रकार से, इस हेतु से, हि- निश्चय से, इत्- ही, मदे- आनन्द में, सोमे- ऐश्वर्य की प्राप्ति कराने वाले में, ब्रह्मा- चारों वेदों के जानने वाला महान् ज्ञानी, चकार- करे, वर्धनम्- बढ़ती को, शविष्ठ- अत्यन्त बल से, वज्रिन्- हे शक्तिशालिन् (शस्त्रास्त्र विद्या से सम्पन्न सभापति), ओजसा- अपने पराक्रम से, पृथिव्याः- पृथिवी के, निःशशा- दूर कर दे, अहिम्- मेघ को, अर्चन्-अनु- अनुकूलता से सत्कार करता हुआ, स्वराज्यम्- अपने राज्य की।

महर्षि दयानन्द प्रस्तुत ऋचा के भावार्थ में लिखते हैं- मनुष्यों को चाहिए कि चक्रवती राज्य की सामग्री इकट्ठी कर और उसकी रक्षा करके विद्या और सुख की निरन्तर वृद्धि करें।

उपर्युक्त मन्त्र में 'स्वराज्य' शब्द विशेष विचारणीय है। वर्त्तमान विश्व में अधिकतर प्रजातन्त्रात्मक शासन हैं। प्राचीन समय में राजतन्त्र था। उपर्युक्त मंत्र का आदेश है कि यदि कोई राजा अपने राज्य को बढ़ाना चाहे, या उसको सुन्दर बनाकर उसमें आनन्द पाना चाहे तो उसे तीन बातों का ध्यान रखना चाहिएः-

१. जैसे ब्रह्मज्ञानी अपने ज्ञान को चारों वेदों के द्वारा बढ़ाता है, वैसे ही वह अपने राज्य का ज्ञान प्राप्त करके उसे उन्नत करे।
२. पृथ्वी के साम्राज्य को पाने के लिए वह अपने मन, आत्मा और बुद्धि के साथ शारीरिक शक्ति को बढ़ाए।
३. जैसे सूर्य मेघ को निःशेष (दूर) करता है, वैसे ही अपनी श्रद्धा के बल से स्वराज्य का सम्मान करके, उसे सुराज्य बनाये।

महामना श्री बाल गंगाधर तिलक ने स्वराज्य के महत्व को भली भाँति समझा था। निश्चयतः उन्होंने स्वराज्य का सन्देश महर्षि दयानन्द से पाया था और महर्षि ने वेद से। श्री तिलक जी ने घोषणा की थी कि स्वराज्य मानव का जन्मसिद्ध अधिकार है। भारत-भक्त तिलक के ये शब्द भारतवासियों के कर्ण-कुहरों में गूँज उठे। फलतः सभी की धमनियों का रक्त गरम हो उठा। भारतीय वीरों ने अपने प्राणों को बलिवेदी पर चढ़ाकर देश को स्वतन्त्र किया। १५ अगस्त सन् १९४७ से भारतवासी परतन्त्रता की बेड़ियों से मुक्त होकर स्वराज्य में साँस ले रहे हैं।

डॉ. उदय नारायण गंगू

वर्तमान समय में विश्व के अनेक परतन्त्र देश स्वतन्त्र होकर सम्मान का जीवन जीने लगे हैं। १२ मार्च सन् १९६८ से मॉरीशस भी एक स्वतन्त्र देश है। श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने मॉरीशस को लघु भारत की

संज्ञा से अभिहित किया था। स्वराज्य मिलने पर मॉरीशस विद्या की ओर द्रुत गति से अग्रसर हुआ। देखते-देखते यह देश सुख-समृद्धि के शिखर पर आसीन हो गया।

'स्वराज्य' तथा 'स्वतन्त्र' में भेद है। 'राज्य' शब्द प्रकाश का प्रतीक है और 'तन्त्र' शासन का। शासन करने के लिए प्रकाश का होना आवश्यक है। यह प्रकाश ज्ञान से प्राप्त होता। उपर्युक्त मन्त्र का यही सन्देश है कि सभी मनुष्य ज्ञान प्राप्त करें। राजा वा शासक को

विशेषतया राजनीति का ज्ञान पाना परमावश्यक है।

राजा या शासक को बाज पक्षी की भाँति धन, बल, वीरता, दूरदर्शिता आदि से समृद्ध होना चाहिए, तभी वह शत्रुओं का नाश कर सकता है। ऋग्वेद का उपर्युक्त मन्त्र कह रहा है कि हे इन्द्र के समान ऐश्वर्यशालिन्! तू पृथ्वी पर ही आकाश को उतार कर सूर्य की भाँति मेघरूपी शत्रुओं का नाश कर दे। जैसे जल बहकर कूड़े कर्कट को दूर करता है, वैसे ही पृथ्वी के दोषों को दूर दे। जब घने बादल उमड़-घुमड़ कर आते हैं और सूर्य के ओज को भी ओट में डाल देते हैं, तब सूर्य अन्दर-ही-अन्दर उन का भेदन करता हुआ, उनको जल की भाँति पिघला दे, ताकि वे तेरे मित्र बनकर तेरी शरण में आ जायें, जिससे तेरे राज्य का विस्तार हो और तू सूर्य के समान पृथ्वी पर चमक उठे। राजा को चाहिए कि वह असंख्यात शुभ कर्मों द्वारा अपने प्रकाश को फैलाकर विविध प्रकार के ऐश्वर्य को अर्जित करके अपनी प्रजाओं की रक्षा करते हुए निरन्तर अपने स्वराज्य का मान करके उत्तम राज्य की स्थापना करे।

प्रजा भी इसी प्रकार के राजा की चाहना करती है, जो शिकारी की भाँति अपने शत्रुओं पर दृष्टि रखता हो, अपनी उत्तम बुद्धि से कपटियों का नाश करता हो तथा अपने राज्य का आदर करता हुआ उसको उत्तम बनाता है।

उपर्युक्त ऋचा उपदेश दे रही है कि राजा शक्तिशाली हो। यह तभी सम्भव है, जब राजा की सेनाओं की शक्ति इतनी हो कि असंख्य जलपोतों को, हवाई मार्गों से चलने वाले वायुपोतों को तथा पृथ्वी पर चलने वाली सेनाओं को अपने शस्त्रास्त्रों से वह वश में करते हुए अपने राज्य में सुराज्य की स्थापना कर सके। राजा के अन्दर इतनी चेतनता हो, इतनी ओजस्विता हो कि सभी उसके अनुशासन का पालन करें।

सुराज्य की स्थापना में प्रजाओं के भी कर्तव्य हैं। उन्हें चाहिए कि वे अपने ऐसे राजा के प्रति सद्भावना रखें, जो अपने असंख्य शुभ कर्मों से उनकी सहायता करता है। उन्हें विश्वास होना चाहिए कि वह केवल राजा ही नहीं, बल्कि ब्रह्मज्ञान के साथ-साथ अन्नादि से भी समृद्ध हैं। राजा-प्रजा परस्पर विरोध न करके छोटे-बड़े सब प्रेम से रहें, तभी सुख की प्राप्ति हो सकेगी।

ऋग्वेद की इस ऋचा ने जो उपदेश, आदेश और संदेश दिया उसे रघुकुल के राजाओं ने शिरोधार्य किया था। राम के पूर्वज महाराज रघु का शौर्य, बल, पराक्रम ऐसा ही था। उनके अनुशासन में रहकर सभी उनके मित्र बनकर उनका आदर-सत्कार करते थे। राजा रघु को अपने अश्वमेघ यज्ञ में मैत्री भाव से उपहार रूप में अमूल्य धन प्राप्त हुआ था, जिसका उन्होंने सर्वस्व दान कर दिया था। यही सुराज्य का अनुपम उदाहरण है।

स्वराज्य के बारे में वेद ने बड़ी सुन्दर कल्पना की है। सूर्य का तेज इतना महान् है कि जब वह मेघ को काटने के लिए अपना तेज डालता है, तब भयभीत हुई बिजली थर-थर काँपती है। बिजली का चमकना उसके भयभीत होने का प्रतीक है।

ऐसे ही राजा सूर्य की भाँति चमकता हुआ अपनी सहसेनाओं के साथ युद्ध-भूमि में छलियों एवं दम्भियों का नाश करके अपने राज्य को बढ़ाये और समृद्ध करे।

स्वराज्य में मानवमात्र ही नहीं, प्रत्युत इसमें स्थावर - जंगम सभी आते हैं। राजा को चाहिए कि स्थिर रहने वाली प्रकृति के साथ ही पशु-पक्षियों की भी रक्षा करे, ताकि मानवों को सबसे लाभ होता रहे।

शासक-प्रशासकों को उसी तरह नियम पर चलते रहना चाहिए, जैसे सभी ग्रह-उपग्रह सूर्य के प्रभाव से नियमित चलते हैं। प्रशासक गण अपने पद का दुरुपयोग न करें, निर्धनों के बल पर अपना महल खड़ा न करें, अन्यथा सुराज्य की स्थापना कदापि हो न सकेगी।

उत्तम विद्यावान्, तन, मन और आत्मा से बलवान्, श्रेष्ठ कर्म करने वाले पुरुषार्थीजन, अपने उत्तरदायित्व को ईमानदारी से निभाने वाले कर्मचारीगण, वेदों के प्रवक्ता, शुभ गुणों से युक्त, शुद्ध, बुद्ध, तपस्वी आत्मायें एवं कृषि और वाणिज्य से देश को धन-धान्य से सम्पन्न करने वाले वैश्य जन स्वराज्य को सुराज्य बनाने में योगदान देते हैं।

सुराज्य में बसने वाले जन ही आनन्द की अनुभूति कर सकते हैं। सुराज्य के अभिलाषी को सर्वप्रथम अपनी भूमि के प्रति अपनत्व की भावना रखनी चाहिए। शासकों को कर्मवीरों, युद्धवीरों, दानवीरों, धर्मवीरों और विद्यावीरों का सम्मान करना चाहिए। न्यायाधीशों को न्यायकारी परमात्मा की भाँति न्याय करना चाहिए। वैदिक राज्य की स्थापना करने का अनवरत प्रयास होते रहना चाहिए।

- पोर्ट लुईस, मारीशस

आत्म निवेदन

Every day is mother's day

एक कथा का स्मरण हो रहा है। दो औरतों में एक बच्चे के मातृत्व को लेकर झगड़ा चल रहा था। दोनों ही एक द्विवर्षीय सुन्दर बालक को लेकर झगड़ रहीं थीं। दोनों का कथन था कि वह ही उसकी माँ है। मामला राजा के दरबार में पहुँचा। राजा ने अनेक प्रकार के प्रश्न पूछे व अन्य प्रकार से परीक्षा ली। पर वे भी किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पाये। अन्त में उन्हें एक उपाय सूझा। उन्होंने आदेश दिया कि बच्चे को दो बराबर भागों में बाँटकर एक-एक भाग दोनों औरतों को दे दिया जाय। दरबार में सन्नाटा छा गया। दोनों औरतें भी स्तब्ध। राजा के आदेश का निहितार्थ जब सबकी समझ में आया तो फरियादी महिलाओं में एक महिला चीख पड़ी। रोते हुए राजा से बोली- 'महाराज! यह बच्चा इसी सामने खड़ी महिला का है इसको ही दे दें। परन्तु कृपया बालक के दो टुकड़े न करवायें।' राजा ने तुरन्त बेहिचक निर्णय दिया कि बालक की माता वही है जो बालक का त्याग करने हेतु समुपस्थित है। क्योंकि माँ अपनी सबसे बड़ी पूँजी भी न्यौछावर कर देगी परन्तु बच्चे को खरोंच भी नहीं आने देगी। इस माँ की सबसे बड़ी दौलत इसके जिगर का टुकड़ा वह बालक है। माँ इसका बिछोह तो दिल पर पत्थर रखकर सह लेगी पर बच्चे का वध नहीं।

वस्तुतः माँ की ममता को परिभाषित नहीं किया जा सकता। उसकी गहराई किसी साधन से नहीं मापी जा सकती। माँ के आँचल की छाँव में असीम शक्ति है। उसका प्यार अमूल्य है। गीतकार ने सही ही लिखा-

'भगवान के पास भी माता, तेरे प्यार का मोल नहीं।'

ममता का सम्बन्ध सामर्थ्य से कतई नहीं है। दुनिया की प्रत्येक माँ कुछ करने का निश्चय करने से पूर्व यह सोचती भी नहीं है कि उसके पास वैसा करने की सामर्थ्य भी है वा नहीं। बच्चा भूख से तड़प रहा है माँ की छातियाँ सूखी हैं। अपनी बेबसी व बालक की यन्त्रणा के बीच फँसी माँ की छटपटाहट को कोई करीब से देखे तो निश्चय ही वह कवि का समर्थन करेगा-

माँ एक नाम है, त्याग और समर्पण का,
माँ प्रतिरूप है, साफ, उजले दर्पण का।

माँ का प्यार अपार है। उसकी आँखों से देखें तो उसका बच्चा संसार का सबसे सुन्दर बच्चा है। एक बालक भीड़ के बीच रो रहा था। आपने प्रायः देखा होगा कि सुन्दर व सुविभूषित बच्चे को सभी प्यार की नजर से देख लेते हैं। पर यह बालक सुन्दर तो क्या कुरूप की श्रेणी में आता था। मैले कुचैले कपड़े थे। रो रहा था। माँ से विछुड़ गया था। लोग उसकी ओर देखते थे और उपेक्षा भाव दिखाकर चल देते थे। तभी उसकी माँ उसे ढूढती आयी। लपक कर बच्चे को उठा सीने से लगा लिया। बार-बार बच्चे के चेहरे को चूमकर उसे अपने साथ ले गयी। यह आत्मा से आत्मा का मिलन था। चमडी के रंग रूप का कोई काम न था। माँ की ममता ऐसी ही होती है। उसकी नजर में उसकी सन्तान ही सर्वश्रेष्ठ होती है।

माँ के प्यार को भौगोलिक सीमा में नहीं बाँधा जा सकता। जातियों या मजहबों की बेड़ियों में नहीं जकड़ा जा सकता और न गरीबी अमीरी के विभेद में। संभवतः यह एक मात्र भाव है जो सदा सर्वत्र हर मजहब, हर देश-प्रदेश की माँ में समान रूप से पाया जाता है। मैं यह भी कहने को तैयार हूँ कि माँ का यह प्यार जाति के सीमा बन्धन में भी नहीं है। वेद भगवान ने ममता के संदर्भ में गाय और सद्यःजात बछड़े का उदाहरण दिया है।

मानवेतर योनियों में भी मातृत्व का यह भाव पाया जाता है। जलचर, नभचर, थलचर सभी जातियों की माताओं में बच्चे के लालन पालन तथा उसकी सुरक्षा का भाव प्रबलता से पाया जाता है। बन्दरी की ममता तो यहाँ तक प्रसिद्ध है कि वह मरे हुए अपने बच्चे को सीने से चिपकाकर घूमती रहती है।

महर्षि दयानन्द जी महाराज का सत्यार्थप्रकाश में यह कथन- 'जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं कर सकता।' मनुष्य

जाति पर तो लागू होता ही है परन्तु उसे प्रत्येक जाति की माँ के सन्दर्भ में देखा जा सकता है।

मातृ दिवस पर ही यह कहा जाय ऐसा नहीं,- यह सार्वभौम सत्य है कि माँ का कोई सानी नहीं। माँ की सम्मोहिनी मूर्ति को लक्ष कर बिली सण्डे ने ठीक लिखा था- 'कला की दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं है जैसाकि उन लोरियों में होता था जो माँऐं गाती थीं। माँ का प्यार और मातृत्व का भाव अनुपमेय है' यह इस तथ्य से घोषित होता है कि आज की अत्याधुनिक फैशन परस्त नारी भी मातृत्व से वंचित नहीं रहना चाहती चाहे इस क्रम में उसे अपनी सुन्दर काया में असुन्दर परिवर्तन सहने पड़ते हों।

एक प्रेरक प्रसंग स्वामी विवेकानन्द जी की जीवनी में आता है। एक जिज्ञासु ने स्वामी जी से प्रश्न किया कि माँ की महिमा का इतना गुणगान क्यों किया जाता है? स्वामी जी ने कहा कि इस बात का उत्तर मैं तुम्हें कल दूँगा। अभी तो तुम एक ५ सेर का पत्थर लेकर आओ। जब वह पत्थर ले आया तो स्वामी जी ने उसे व्यक्ति के पेट पर बँधवा दिया तथा हिदायत दी कि कल तक इसे एक क्षण के लिए भी मत खोलना तथा मेरे पास चले आना।

प्रथम तो उस व्यक्ति ने इसे साधारण सा कार्य माना पर शाम होते-होते वह परेशान हो गया। चलना फिरना असह्य हो गया। वह शाम को ही स्वामी जी के पास पहुँच गया, बोला- 'मैं इस पत्थर को अब और अधिक देर तक नहीं बाँध सकता। एक प्रश्न का उत्तर पाने के लिए इतनी बड़ी सजा नहीं भुगत सकता।

स्वामी जी मुस्कराते हुए बोले- 'पेट पर इस पत्थर का बोझ तुमसे कुछ घंटे भी नहीं उठाया गया और माँ अपने गर्भ में पलने वाले शिशु को पूरे नौ माह तक ढोती है और घर-बाहर का सारा काम भी करती है। संसार में माँ के सिवा कोई इतना धैर्यवान और सहनशील नहीं है इसलिए माँ से बढ़कर इस संसार में कोई और नहीं। महाभारत में भी यक्ष-युधिष्ठिर संवाद में माँ को धरती से भी भारी इसी कारण बताया। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि माँ की महिमा-गायन में हर लेखनी असमर्थ है। मातृत्व दिवस मनाना तो ठीक है पर क्या इस एक दिन को मनाकर माँ के प्रति हमारे कर्तव्यों की इतिश्री हो जायेगी? हमें आत्मावलोकन करना होगा कि हमारे घर में बुजुर्ग माँ की स्थिति मुंशी प्रेमचन्द की बूढ़ी काकी जैसी कदापि न हो जाये। जिस घर में माँ का दिल तनिक सा भी दुःखे उस घर के सभी वासियों के पुण्यों का क्षय हो जाता है यह सुनिश्चित है।

माँ बाप की दुआ, जिन्दगी बना देगी, खुद रोएगी मगर आपको हँसी देगी,
भूलकर भी माँ को न रुलाना, एक छोटी सी बूँद पूरी जमीं को हिला देगी।

अतः माँ की सेवा सुश्रुषा करे वह भी लोक लाज के कारण नहीं वरन् उसके उपकारों का स्मरण करते हुए श्रद्धा व प्रेम से। महर्षि दयानन्द ने उचित ही निर्देश दिया-'अपने माता-पिता और आचार्य की तन-मन-धनादि उत्तम उत्तम पदार्थों से प्रीतिपूर्वक सेवा करे।' यह 'प्रीतिपूर्वक' विशेष है। मातृसेवा में श्रद्धा व स्निग्धता आवश्यक है।

आज हमें यह भी विचार करना होगा कि हमारे पारिवारिक परिवेश में संस्कारों का ऐसा प्रवाह हो रहा है या नहीं कि 'हामिद' की भावना हर बच्चे में दृढ़ता से स्थापित हो कि भोजन बनाते समय माँ के हाथ जलते देख नन्हा सा बालक भी अपने खिलौने के पैसे से खिलौने न लाकर चिमटा खरीद लाये। कहीं परिवार के सदस्य चलचित्र 'बागबान' में दिखाए स्वभाव के तो नहीं हो रहे जहाँ मात्र चश्मा टूटने पर बुजुर्गवार के चेहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगती हैं?

इन प्रश्नों का सकारात्मक हल खोजें तभी मातृ दिवस मनाने की सफलता है।

इसलिए कवि द्वारा व्यक्त भावना पर विचार करें -

माँ ने जिन पर कर दिया, जीवन को आहूत, कितनी माँ के भाग में, आए श्रवण सपूत।
आए श्रवण सपूत, भरे क्यों वृद्धाश्रम हैं, एक दिवस माँ को अर्पित क्या यही धरम है?
माँ से ज्यादा क्या दे डाला है दुनिया ने, इसी दिवस के लिए तुझे क्या पाला माँ ने?

इसलिए लेखनी को विश्राम देते हुए यही कहूँगा-

Always remember -

Not only one day in a year is mother's day but every day is mother's day.

अशोक आर्य
०९००१३३९८३६, ०९३१४२३५१०१

अपने बुरे दिनों को याद रखो

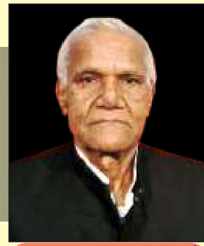

खुशहाल चन्द आर्य

बुरे दिनों को याद रखोगे तो अच्छे दिन कभी जायेंगे ही नहीं या जायेंगे तो जाने में काफी देर लगेगी। बुरे दिनों को याद रखने का तात्पर्य है कि अपने गरीबी के दिनों को याद रखना, अपने तकलीफ के दिनों को स्मरण रखना। अपने तकलीफ के दिनों को याद रखने से मनुष्य को कई लाभ हैं। पहला लाभ तो यह है कि कभी भी अभिमान नहीं आयेगा। अभिमान ही पतन की जड़ है। जब मनुष्य का पतन होगा ही नहीं तो अच्छे दिन सदा बने रहेंगे। दूसरा लाभ यह है कि वह ईश्वर को सदा धन्यवाद देता रहेगा यानि वह ईश्वर को सदा याद करता रहेगा। जो व्यक्ति ईश्वर को धन्यवाद देता है, उसके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करता रहता है वह सदैव उन्नति करता रहेगा, कारण कृतज्ञता ही उन्नति करने का सोपान है जिसके सहारे मनुष्य हमेशा ऊपर चढ़ता ही रहेगा। तीसरा लाभ यह है कि उसको अपने कर्तव्य का सदैव ध्यान बना रहेगा और वह सच्चाई और ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन करता रहेगा जिससे उसका सम्मान बढ़ता जायेगा। चौथा लाभ यह है कि वह मेहनती और परिश्रमी बना रहेगा। काम करने में उसका मन सदा लगता रहेगा। कर्म ही मनुष्य का भाग्य होता है। कर्म करने वाले को भाग्य कभी धोखा नहीं देता और वह व्यक्ति सम्पन्नता व ऐश्वर्य की ओर बढ़ता ही जायेगा। पाँचवाँ लाभ यह है कि वह मृदुभाषी व मिलनसार भी होगा। हर व्यक्ति से प्रेम करेगा और वैर वैमनस्य से सदा दूर रहेगा जिससे उसकी भरपूर उन्नति होगी। छटा गुण यह है कि वह धैर्यवान व क्षमाशील भी होगा जो मनुष्य को आगे बढ़ाने में सबसे अधिक काम आते हैं। सातवाँ गुण यह है कि जो धैर्यवान और क्षमाशील होगा वह क्रोधी भी नहीं होगा। क्रोध ही विनाश की जड़ है। इस प्रकार जिस व्यक्ति में यह सात गुण होंगे उसे उन्नति व समृद्धि के पथ पर बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। सफलता ऐसे व्यक्ति का स्वागत करती है। उन्नति उसको अपने गले लगाती है। इसकी पुष्टि के लिए एक कथानक प्रस्तुत करता हूँ। वह इस भाँति है।

एक व्यक्ति बहुत गरीब था, वह समझदार बहुत था। वह नौकरी करने के लिए किसी सेठ के पास गया और सेठ ने कहा कि मेरी हालत बहुत कमजोर है, दो समय की रोटी भी नसीब नहीं होती। आप कृपया मुझे चाहे रोटी-रोटी पर ही रख लीजिए। मैं आपका काम पूरा ईमानदारी, सच्चाई और मेहनत के साथ करूँगा। आपको किसी प्रकार की शिकायत का मौका नहीं दूँगा। मैं अपनी प्रशंसा अपने मुख से क्यों करूँ? आप मेरा काम एक महीना मुझे रखकर देख लीजिए फिर आप स्वयं ही जान जाओगे। सेठ बड़ा समझदार था, उस व्यक्ति को अच्छा समझकर उसको अपनी गद्दी में भारी झाड़ू निकालने के लिए रख लिया। वह व्यक्ति इतनी ईमानदारी, सच्चाई और मेहनत से कार्य करता था कि बहुत जल्दी मालिक के मुँह लग गया और मालिक ने उसकी उन्नति करके अपना हेड कैशियर बना दिया यानि रुपये पैसों का पूरा हिसाब उस व्यक्ति के जिम्मे कर दिया और नौकरी भी काफी बढ़ा दी। इससे पहले नौकरी करने वाले व्यक्ति इस ईमानदार व्यक्ति से ईर्ष्या-द्वेष करने लगे। वे इसे किसी भी प्रकार मालिक की नजरों से गिराना चाहते थे जिससे उसकी उन्नति में बाधा पड़ जावे।

वह व्यक्ति प्रथम में आया था तब उसके पास जो फटे पुराने कपड़े जिनको वह पहनकर आया था उन कपड़ों को उसने अपनी टूटी हुई पेटी में रख दिए था। जब नौकरी लग गई और उन्नति हो गई तब वह दिन में एक बार रात को सोते समय

बराबर उस पेटी को खोलकर देखता था और फिर बंद करके सो जाता था। पुराने नौकरों ने इसकी इस नित्य की क्रिया को देख लिया और उनको यह एक अच्छा अवसर मिल गया जिसकी शिकायत करने से मालिक का मन जरूर आशंकित हो जायेगा। उन सबने मिलकर मालिक से कहा कि यह नया व्यक्ति जिसको आप बड़ा ईमानदार समझते हैं, यह तो बड़ा बेईमान और चोर है। मालिक ने पूछा कैसे? तब उन्होंने कहा कि यह व्यक्ति नित्य रात को सोते समय अपनी एक पेटी के पास जाता है और उसे खोलकर उसमें कुछ रखकर आता है तो जरूर उसमें कुछ चोरी किये हुए रुपये या कोई कीमती सामान

रखकर आता है और फिर ताला लगाकर सो जाता है। मालिक ने कहा यह ऐसा व्यक्ति नहीं है जो चोरी करे। आप लोग इस ईमानदार और सच्चे व्यक्ति पर झूठा दोष लगा रहे हो। मैं किसी हालत में मान नहीं सकता। तब उन्होंने कहा कि इसमें झूठ की क्या बात है आप भी देख सकते हैं। तब मालिक ने छिप-छिप कर उस व्यक्ति को तीन चार दिन देखा और उन लोगों की बात सही सिद्ध हो गई। तब मालिक को भी उस व्यक्ति की ईमदानरी पर विश्वास उठ गया और उसे बेईमान समझ कर मालिक ने उससे पूछा कि 'आप नित्य अपनी पुरानी पेटी में क्या रख कर आते हो? मैं अभी तक धोखे में ही रहा कि तुमको ईमानदार समझता रहा परन्तु लोगों के कहने से मुझे ज्ञात हुआ कि तुम कुछ रकम चोरी करके नित्य तुम्हारी पेटी में रख कर आते हो।'

उस ईमानदार व्यक्ति में कोई घबराहट नहीं हुई और निश्चिन्त भाव से मालिक को उस पेटी की चाबी दिखाते हुए कहा 'सेठजी' यह चाबी उस पेटी की है, आप स्वयं ही उस पेटी को खोलकर देख लेवें कि मैंने उस पेटी में क्या रखा है? तब मालिक ने उस चाबी से उन सभी पुराने नौकरों के सामने उस पेटी को खोला तो सभी आश्चर्यचकित हो गए। उन्होंने देखा कि उस पेटी में पुराने फटे कपड़ों को छोड़कर और कुछ नहीं था। तब मालिक ने उस व्यक्ति से पूछा कि आप इस पेटी को नित्य खोलकर क्यों देखते थे? तब उस ईमानदार व्यक्ति ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से जो कुछ कहा वह हृदय को हिला देने वाली बात थी। उसने कहा 'मालिक' मैं अपनी पुरानी दुर्दशा को नित्य इसलिए देखता था कि कभी तुम्हारे यह दिन भी थे। मैं अपने दुर्दिनों को याद करके आगे वाले भविष्य को उज्ज्वल बनाने की इच्छा बलवती बनाता था और मन में सोचता था कि यदि तुमने मालिक से किसी किस्म की बेईमानी, चोरी, शैतानी की तो फिर तुम्हारे वही दिन आ सकते हैं इसलिए इन फटे पुराने कपड़ों को देखकर मुझे अपने कर्तव्य का बोध होता था और मैं सब प्रकार की बेईमानी, चोरी, शैतानी न करने का निश्चय करता था और अपने कर्तव्य का ध्यान रखते हुए और अधिक ईमानदारी, सच्चाई और मेहनत से काम करते रहने की भावना को मजबूत बनाता था।

यह सुनकर मालिक का हृदय गद्‌गद्‌ हो गया और उसे प्रेम से अपने गले लगाकर अपनी भूल की क्षमा माँगी। उस व्यक्ति ने कहा 'मालिक' आप तो मेरे अन्नदाता हो, मैं आपको क्षमा करने वाला कौन हूँ। मैं तो अपने साथियों का धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने मेरी सच्चाई व ईमानदारी को प्रत्यक्ष करने में सहयोग दिया। यह हैं बुरे दिनों को याद रखने से लाभ।

गोविन्द राम आर्य एंड संस
१८० महात्मा गांधी रोड, दो तल्ला, कोलकाता ७०००07

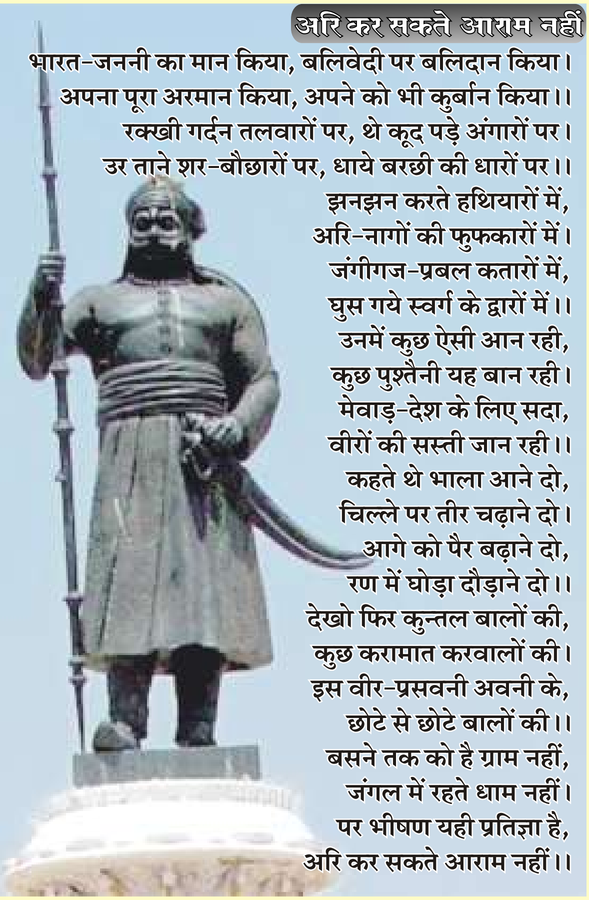

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्

* न्यास द्वारा ON LINE TEST प्रारम्भ।
* वर्ष में तीन बार दिया जावेगा ५१०० रु. का उपरोक्त पुरस्कार।
* आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
* विश्व भर के लोगों से इस ON LINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

बेवसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सद्‌चिंतन और सत्कर्मों
का मिलता यह उपहार।
सुख की सरिता सदा है बहती,
यश गाता पूरा संसार॥

सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

एक शिक्षात्मक एवं व्यंगात्मक लेख

वेदों में मेरा इतिहास

वेदरत्न डॉ. सत्यव्रत राजेश

मेरे लेख का शीर्षक देखकर चौंक गए न? चौंक जाओ, मुझे क्या? जब वेद में मेरा इतिहास मिलता है तो क्यों न बताऊँ। मुझसे बड़ी आयु के दुनिया के करोड़ों लोग कहेंगे कि हमारे सामने उत्पन्न हुआ यह व्यक्ति वेद में अपना इतिहास बता रहा है। वेद तो इसके जन्म से भी युगों पहले के हैं, फिर वेद में इसका इतिहास कैसे आ गया? हमारे जीवित गुरुजन, जिनके चरणों में बैठकर हमने सिद्धान्त शिरोमणि, विद्यावाचस्पति, शास्त्री, प्रभाकर, वेदशिरोमणि, एम.ए., पीएचडी आदि उत्तीर्ण की हैं, वे कहेंगे कि जब हम इसे पढ़ाते थे तब भी वेद ज्यों के त्यों थे, फिर वेद में इसका इतिहास कैसे संभव है? कुछ परिचित जन कहेंगे कि इसे क्या हो गया, कहीं भाँग खा कर तो नहीं लिख रहा? कल तो वेद में इतिहास नहीं इस विषय का प्रतिपादन संस्कृत अकादमी दिल्ली में कर रहा था, वहाँ की संगोष्ठी में शोध निबन्ध पढ़कर तथा वेदवाणी मासिक पत्रिका के कई अंकों में 'वेद में इतिहास नहीं' इस विषय पर इसके लेख छपते रहे और आज लिख रहा है कि वेद में मेरा इतिहास है।

ऐसा कहने वाले समस्त सज्जनों से मेरा निवेदन है कि मेरा यह लेख उन महानुभावों के लिए नहीं है जो वेद में इतिहास नहीं मानते। वस्तुतः मैं उनसे सहमत हूँ कि वेदों में इतिहास नहीं है। मेरा यह लेख तो उन महाविद्वानों (महा ब्राह्मणवत्) के लिए है जो वेदों में इतिहास मानते हैं। वे चाहे पुराने लोग हों या आधुनिक। वे पूछना चाहेंगे कि कहाँ है वेद में आपका इतिहास? आज वेद में अपना इतिहास बताने बैठे हैं। यदि वेद में आपका इतिहास था तो पहले क्यों नहीं बताया। वेद में तो आपका नाम भी नहीं है फिर इतिहास कैसे बता रहे हो। उनसे मेरा निवेदन है कि यह मेरी ताजा खोज है। आपको तो इसे नूतन अन्वेषण कहना चाहिए। जब मैंने यह खोज ही अभी की है तो आपको पहले कैसे बताता। उत्सुक होंगे न मेरा इतिहास देखने के लिए तो देखिए-

अग्नि याहि सहस्त्रं देववन्दैः सत्यैः कविभिर्ऋषिभि धर्मसद्भिः॥

इस मंत्र में देववन्द, सत्य, कवि, ऋषि तथा धर्मसद् ये पाँच शब्द तृतीया विभक्ति के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। आयाहि क्रिया पद है तथा सहस्त्रम् क्रिया विशेषण है। इसमें बहुवचन आदरार्थ है। लोक में भी आदरार्थ बहुवचन का प्रयोग होता है। जैसे एक गुरु के आने पर भी अस्माकं गुरुः आयान्ति- हमारे गुरु जी पधार रहे हैं, यह बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। आप कहेंगे कि इस मंत्र में तो कहीं आपका नाम आया ही नहीं फिर इससे अपना इतिहास कैसे बताने लगे? मेरा निवेदन है कि मंत्र में 'सत्य' पद मेरे ही नाम का संक्षिप्त रूप है। नाम में संक्षिप्तीकरण की यह प्रवृत्ति पाणिनि, पतंजलि आदि ऋषि तथा आधुनिक भाषा विज्ञानी भी स्वीकार करते हैं। देवदत्त को देव, वसुमित्र को वसु, सुधांशु को अंशु या जगदीश को जग्गा, रामदीन को रामू, चन्द्रकान्ता को चन्द्रा आदि अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं। अंग्रेजी में तो वी.के.शर्मा का पता नहीं चलता कि उसका असली नाम विष्णुकान्त है या वीरेन्द्रकुमार है। सारे संस्थान, पार्टियाँ तथा विश्वविद्यालय भी नामकरण के संक्षिप्तीकरण के साक्षात् निदर्शन हैं। भेल या बी.एच.ई.एल., एम.एम.टी. भाजपा, जद, सजद, एम.डी.यू. (महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी) बी.एच.यू आदि देश-विदेश के हजारों उदाहरण दिए जा सकते हैं जहाँ यह नाम के संक्षिप्तीकरण की प्रवृत्ति पाई जा सकती है। वेद में भी याचाभि के स्थान पर न्याभि का प्रयोग मिलता है। इसी प्रकार मंत्र में मेरा पूरा नाम सत्यव्रत न कहकर सत्य ही कह दिया। शेष देववन्द, कवि, ऋषि तथा धर्मसद् मेरे विशेषण हैं।

मेरे देवबन्द विशेषण का तात्पर्य यह है कि उत्तरप्रदेश के सहारनपुर जनपद में एक उपनगर है देवबन्द। दारुलअजलूम के कारण यह इस्लामिक जगत् में बहुत प्रसिद्ध है। देश-विदेश के मुसलमान छात्र यहाँ विद्याध्ययन के लिए आते हैं। देवबन्द के पास मेरी जन्मभूमि होने से मेरा विशेषण आया है देवबन्द। आप कहेंगे देवबन्द तथा देववन्द में तो अन्तर है।

पहले में ब है तथा दूसरे में व। मेरा निवेदन है कि प्रथम में व तथा ब में विशेष अन्तर नहीं माना जाता। ग्रामीण लोग वेद को बेद तथा वैद्यों को बैद कहते ही हैं। साहित्य में भी कुवेर तथा कुबेर दोनों शब्द मिलते हैं अतः देवबन्द तथा देववन्द में भी यही प्रवृत्ति मान लेनी चाहिए। दूसरे वहाँ बाला सुन्दरी देवी का मंदिर होने के कारण तथा पहले वहाँ वन होने से उस स्थान को देवीवन कहते थे जो कालान्तर में देववन देववन्द-देवबन्द कहा जाने लगा। वाराणसी को भी तो बनारस कहने लगे। वहाँ भी तो व का ब बन गया। यही देवबन्द के साथ घटा किन्तु वेद ने पूर्व वाला देववन्द ही मेरा विशेषण दिया।

मेरा दूसरा विशेषण है कवि। यह इसलिए दिया है कि मैं कभी कभी कविता भी कर लेता हूँ। हालैण्ड में हिन्दी दिवस १४ नवम्बर १९९२ को मनाया था। उस अवसर पर मेरी कविता-

हिन्दी मस्तक की बिन्दी है, संस्कृति की जान है।
हिन्दी मेरी भाषा है, मुझ को इस पर अभिमान है।
जय हिन्दी भाषा।।

को अमस्तर्दाम में मान्य श्री गंगाप्रसाद जी कल्पू ने हार्मोनियम पर गा कर सुनाया था। बहुत पसन्द की हालैण्डवासियों ने ताली बजाकर स्वागत किया। अन्य भी अप्रकाशित कविताएँ हैं। उसी कारण मेरी दूसरा विशेषण दिया है - 'कवि'।

मंत्र में मेरा तीसरा विशेषण है 'ऋषि'। मुझे ऋषि विशेषण इसलिए मिला है कि मैंने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में लगभग २४ वर्षों तक वेद पढ़ाए। ऋग्वेद का एक मंत्र है–

अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीडयो नूतनैरुत॥

अर्थात् वह ज्ञान प्रकाशस्वरूप परमात्मा पुरातन तथा नूतन ऋषियों से .....। इस मंत्र में पुराने तथा नये दो प्रकार के ऋषियों का उल्लेख है। पूर्व ऋषियों में अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा, ब्रह्मा, जमदग्नि, वशिष्ठ, कण्व, श्रद्धा, लोपामुद्रा से लेकर दयानन्द तक लिए जा सकते हैं तथा नूतन ऋषियों में अब वेद पढ़ाने वाले मेरे जैसों को लिया जा सकता है। आप कहेंगे कि ऋषि तो उसे कहते हैं जो वेद मंत्रों से नई बात खोजे। मेरा उत्तर है कि वेद में मेरा इतिहास कोई नहीं खोज पाया। यह खोज मैंने ही की है। इस खोज के कारण भी आप मुझे ऋषि मान लें। अन्यथा दिखलाएँ कि यह खोज किसी अन्य ने की है।

मेरा चौथा विशेषण है 'धर्मसद्'। धर्म, यज्ञ को कहते हैं तथा सद् का अर्थ होता है बैठना। अतः धर्मसद् का अर्थ हुआ 'यज्ञ के पास बैठने वाला' अर्थात् यज्ञ करने वाला। मैं प्रतिदिन यज्ञ करता हूँ अतः वेद ने मुझे 'धर्मसद्' कहा है।

इतना स्पष्ट मेरा इतिहास वेद में मिलता है। आप कहते थे कि वेद में अपना इतिहास दिखाओ। मैंने वेद में अपना इतिहास दिखा दिया। प्रशंसा करना मेरी इस नूतन खोज की। यदि कोई बड़ा सा पुरस्कार दिलवा सको तो अवश्य दिलाना। सायण तथा ग्रिफिथ आदि से भी अनछुए तथ्य का उद्घाटन जो मैंने किया है।

आप कहेंगे कि हम इसे नहीं मानते, तो मेरा निवेदन है कि जब आप अन्य अनेक ऋषियों, व्यक्तियों, राजाओं या नगरों का मंत्रों में नाम देखकर वेद में उनका इतिहास मानते हो तो मैंने आपका क्या बिगाड़ा है जो आप मेरा इतिहास वेद में नहीं मानते। श्रीमन्! मेरे साथ ऐसा अन्याय मत कीजिए। मैंने तो अपना पूरा इतिहास वेद में दिखा दिया, फिर वेद में मेरा इतिहास मानने से आप मना क्यों कर रहे हैं? आपकी तो वेद में इतिहास मानने में कुछ बुद्धि ही होगी। मानिए, जनाब वेदों मेरा इतिहास मानिये, आपका बहुत आभर मानूँगा।

शायद आप यह कहें कि ऐसे तो हजारों लाखों वर्षों बाद भी कोई अन्य अपना इतिहास दिखाने का प्रयास करेगा तो क्या उसे भी मान लिया जाए? हमारा उत्तर है कि आपने ही वेद में इतिहास मानने की प्रवृत्ति को पनपाया है। जब आप वेद में इतिहास मानते हैं तो मेरा भी मानिए तथा अपने अनुयायियों से कह जाना कि लाखों करोड़ों वर्षों बाद भी यदि कोई वेद में अपना इतिहास देखे तो उसे भी मान लेना, मना मत करना।

आप इसे असंभव बताते हुए कहेंगे कि ऐसा नहीं हो सकता। न वेदों में आपका इतिहास माना जा सकता है और न किसी आगे आने वाला का, क्योंकि वेद तो आपके जन्म से हजारों लाखों (यह गणना उनके अनुसार है हमारे अनुसार तो वेद दो अरब वर्षों के लगभग पुराने हैं) वर्ष पुराने हैं। मैं पूछता हूँ कि जिन ऋषि मुनियों का आप वेद में इतिहास दिखाते हो वेद तो उनसे भी युगों पूर्व के हैं। ब्रह्मा जी ने चारों वेदों का अध्ययन किया था, इसीलिए उन्हें चतुर्मुख कहा जाता है। इससे स्पष्ट है कि वेद ब्रह्मा जी से भी पूर्व विद्यमान थे। जब वेद ब्रह्मा जी के समय विद्यमान थे तो उनकी आगामिनी पीढ़ी में उत्पन्न होने वाले मरीचि, कश्यप आदि का इतिहास आप वेद में क्यों मानते हो? जब आप उनका भी इतिहास वेद में मानते हो तो मैंने ही आपका क्या बिगाड़ा है जो आप मेरा इतिहास वेद में नहीं मान रहे हो।

यह भी कहा जा सकता है कि थोड़े से नाम मात्र से किसी का इतिहास नहीं माना जा सकता। तो यह बात तो उन ऋषि मुनि या राजाओं पर भी घट सकती है, जिनका इतिहास आपने नाम मात्र देखकर घड़ लिया। आप कहेंगे कि हमने तो वेंकट माधव, सायण, उवट तथा महीधर आदि के वेदभाष्यों में वे कथाएँ लिखी देखीं तथा उसी आधार पर लिख दीं तो मेरा निवेदन है कि इस वेद मंत्र पर मेरा भाष्य देख कर उस पंक्ति में मुझे भी सम्मिलित कर लीजिए। मेरी तो एक अन्य भी विशिष्टता है जो अन्य किसी भाष्यकार के भाष्य में नहीं मिलेगी। वह यह कि उन्होंने वेद में अन्यों की कथाओं का तो उल्लेख किया है, किन्तु वे वेद में अपना इतिहास नहीं निकाल सके। जबकि मैंने वेद से अपना इतिहास निकाल कर दिखाया। अतः मुझे तो वेद में इतिहास निकालने वालों में अग्रणी माना जाना चाहिए तथा मेरा इतिहास अवश्य स्वीकार करने का कष्ट कीजिए। तो महर्षि दयानन्द आदि के वेदभाष्य देखकर यह घोषणा कीजिए कि वेद में इतिहास नहीं है अन्यथा वेद में मेरा भी इतिहास मानिए, जिसे मैंने ऊपर दिखलाया है। यदि इस प्रवृत्ति पर रोक न लगायेंगे तो मेरी भाँति अनेक लोग भी अपना नाम तथा इतिहास वेद में दिखाया करेंगे तथा आप उन्हें रोक न सकेंगे।

३२९-ए संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली- ११००६५

डॉ. सत्यव्रत राजेश आर्य जगत् के जाने-माने वेदज्ञ थे। वे अनेक बार न्यास में पधारे थे। प्रखर वक्ता व लेखक डॉ. राजेश ने प्रस्तुत लेख में विचित्र तर्क देकर हल्के-फुल्के परन्तु सटीक तरीके से वेदों में इतिहास-निषेध किया है। पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है।

- अशोक आर्य

नवयुग की आहट

– गिरीश त्रिवेदी

हमने हम में से ही कुछ व्यक्तियों को चुनकर हमारी सरकार बनाई ताकि यह सरकार हम सभी देशवासियों की सुख सुविधा की सुन्दर व्यवस्था करे, सबकी प्रगति की योजना बनाए और राष्ट्र को प्रगतिशील और उन्नत करे। यह सरकार हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा को भी मजबूत करे। और यह सब करने के लिए देशवासी कर के रूप में सरकार को धन देंगे। परन्तु ये हमारी चुनी हुई सरकारें अपने कर्तव्य को भूलकर मात्र भाँति-भाँति के मार्गो से कर लेने में ही रुचि लेने लगी। यह अकाट्य सत्य है कि भारत का प्रत्येक नागरिक अपनी आय का आधा हिस्सा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सरकार को देता है। फिर भी आज तक सरकार देशवासियों के लिए न तो पर्याप्त चिकित्सा व्यवस्था दे पाई न शिक्षा का कुछ प्रबन्ध है।

सर्वशिक्षा की बात करने वाली सरकार की उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हिस्सेदारी अल्प प्रमाण में है। राष्ट्रीय सुरक्षा की क्या बात करें, जब-जब दुश्मन देश ने हमला किया हमने हमेशा अपनी जमीन गँवाई है। आज आम भारतीय भूख-अभावग्रस्त है और महँगी शिक्षा से वंचित है। इसके विपरीत हमारे नेता अरबोंपति हैं। एक अन्वेषणानुसार भारत के भ्रष्ट व्यक्तियों का विदेशों में ४०० लाख करोड़ रुपये कालेधन के रूप में जमा है। यह ४०० लाख करोड़ रुपये भारत की जनता से कर के रूप में लूटा हुआ और भ्रष्टाचार से जमा किया हुआ धन है। हम सब देशवासियों के खून पसीने की कमाई का पैसा है। यह ४०० लाख करोड़ रुपये होता कितना है इसे समझाने के लिए स्वर्गीय राजीव दीक्षित कहते थे कि पूरे भारत की सभी सड़कें सोने से बना दें इतना होता है। भारत की पूरी राष्ट्रीय सम्पत्ति का ४० गुना होता है ४०० लाख करोड़। हम सोते रहे और पैसा पार होता रहा और अब भी हम न सँभले तो ये ही होता रहेगा। भ्रष्टाचार को रोकने के लिए, राष्ट्र को आर्थिक और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध करने के लिए देश वासियों को जागना होगा। यदि हम निष्क्रिय रहते हैं तो हम राष्ट्रघाती हुए आत्मघाती हुए।

भारत से भ्रष्टाचार का उन्मूलन और कालेधन पर रोक लगाना आवश्यक है। जब देश हित की कोई बात जोर पकड़ती है तो हमारे भ्रष्ट नेता अन्य कोई अण्ड बण्ड मुद्दा उछाल कर मुख्य बात को दबाने के षड्यंत्र खूब चला करते हैं। जनता को दिग्भ्रमित किया जाता है। हमें किसी छलावे में नहीं आना चाहिए। इस देश के नेता कभी इस पर आरोप तो कभी किस पर प्रत्यारोप करते रहते हैं। आखिर ये हमसे चाहते क्या हैं? उद्देश्य क्या है इनका? हमें इनके मनसूबे भाँप लेने चाहिए। आखिर हमारे ये राजनेता हमें कहाँ पहुँचाना चाहते हैं?

इस समय भ्रष्टाचार के विरुद्ध राष्ट्रीय माहौल गरम है। पूज्य स्वामी रामदेव जी व अन्य अनेक सज्जन सक्रिय हैं, इस अवसर को खोना नहीं है। जिस तरह महाभारत का काल राष्ट्र के विनाश का काल था ठीक वैसे ही आज का समय राष्ट्र के सृजन का ऐतिहासिक समय है। हमारे पास योग्य नेता हैं। हमारे पास उर्जा है तो क्यों न हम परिस्थितियों को पहचान कर, की हुई ऐतिहासिक भूलों को सुधारकर, राष्ट्र को नई व्यवस्था दें जो राष्ट्रवाद से ओतप्रोत हों। इस काम की शुरुआत विदेशों में जमा भारत के कालेधन को फिर से भारत लाकर राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित करके की जाय और साथ ही भ्रष्टाचार के विरुद्ध कठोर कानून बनवाया जाए।

यदि हमारे देश के नेता आर्थिक शुचिता वाले, राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत, दूरदर्शी, कर्मठ और साहसी हों और साथ ही विदेशों में जमा काला धन वापस आ जाए तो वह समय भारत का स्वर्ण युग होगा। भारत सोने की चिड़िया नहीं सोने का शेर होगा। ४०० लाख करोड़ यदि भारत के राष्ट्रीय खजाने में जमा होते हैं तो अगले २५ से ४० साल तक सरकार को जनता से कर लेने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। वैसे भी स्वामी रामदेव जी वर्तमान ६४ प्रकार के

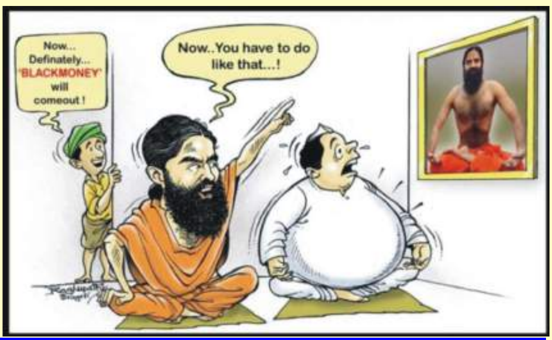

करों को अनावश्यक बताकर मात्र दो प्रतिशत ट्रान्जेक्शन कर लेना पर्याप्त बताते हैं। धन की प्रचुरता से हमारे उद्योग बड़ी ऊँचाइयों को पा सकेंगे। हम हमारी नई-नई तकनीकें विकसित कर पायेंगे। हम रॉकेट, विमान, हेलीकॉप्टर और तमाम उच्च तकनीक के उपकरण स्वयं के बलबूते पर स्वदेशी बना पायेंगे। हमारा राष्ट्र परमाणु ऊर्जा के उत्पाद में विश्व में सर्व अग्रणी बन पायेगा। हम प्रचुर मात्रा में परमाणु विद्युत उत्पन्न कर पायेंगे। ऊर्जा और पूँजी की प्रचुरता से सभी प्रकार के घरेलू उद्योग बड़ी तीव्रता से विकसित होंगे। करों के बोझ न होने से व्यापार और उद्योग अत्यधिक लाभप्रद बन जायेंगे। हमारा निर्यात भी बढ़ जायेगा। नये लाभ से नई पूँजी का निर्माण भी बड़े पैमाने पर होगा।

७० लाख करोड़ रुपये के खर्च से भारत की सभी नदियों को आपस में जोड़ा जा सकेगा जिससे राष्ट्र में सूखा और बाढ़ की समस्या का सदा-सदा के लिए निवारण हो जायेगा। इसका दूसरा फायदा यह हो जायेगा कि आज पानी के अभाव में खाली पड़ी जमीन सब जोती जा सकेगी। हमारा कृषि उत्पाद कई गुना बढ़ जायेगा। हम रासायनिक खेती के मोह और मजबूरी से निकल कर जैविक खाद और जैविक कीटनाशकों पर आधारित खेती कर पायेंगे जिससे देशवासियों के स्वास्थ्य में सुधार होगा।

आर्थिक तंगी न होने से भारत पर्यावरण और वनीकरण में भी पूरा ध्यान दे पायेगा। पूरी शिक्षा व्यवस्था और चिकित्सा

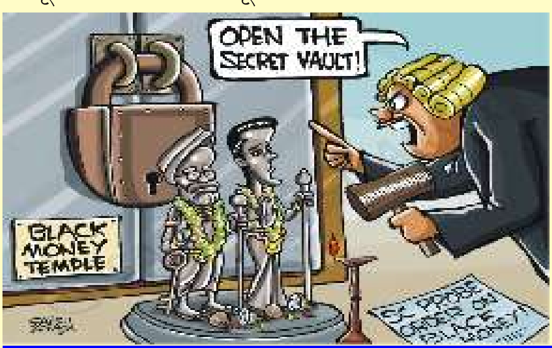

व्यवस्था भारत में निःशुल्क होनी चाहिए। धन की प्रचुरता से यह सब संभव है। ५ लाख करोड़ के खर्चे से भारत में ५००० विश्वविद्यालय खोल कर उनमें निःशुल्क शिक्षा देने का काम किया जा सकता है। अध्यात्म और अर्थ के अनोखे सन्तुलन से भारत की पूरी की पूरी जनता समृद्ध और सन्तुष्ट हो सकती है। झोपड़पट्टी, भूख, अभाव, निराशा, चोरी, भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी आदि-आदि समााजिक रोग बीते काल का बुरा सपना लगेगा। हर नागरिक के पास होगा वातानुकूलित घर, कुबेर के खजाने जैसे मोटे-मोटे बैंक बैलेन्स। अत्याधुनिक कार और अन्य वाहन भारत के सभी आर्थिक प्रतिष्ठान दुकानें, कार्यालय, विद्यालय आदि सभी वातानुकूलित और आवश्यक सभी सुविधाओं से युक्त होंगे। हमारी फौज भी फिर विश्व में सर्वाधिक सुविधाओं से युक्त होगी। और सबसे उन्नत होगी और भारत का परचम पूरी दुनिया में लहरायेगा।

तो अब यह समझ, क्यों न हम नई आजादी, नई व्यवस्था का हिस्सा बनें।

४९६-शनिवार पेठ, झलिना अपार्ट, पूणे ४११०३०

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थ प्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) अवश्य खरीदें।

मात्र ४० ₹

प्राप्ति स्थल

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाबबाग उदयपुर - ३१३००१

अवश्य ध्यान दें

जुलाई १४ तक आजीवन सदस्य बनने वालों को १००रु. मूल्य का, शानदार कैलेण्डर उपहार स्वरूप दिया जावेगा (डेढ़ वर्षीय, सम्पूर्ण ऋषि-गाथा को चित्रित करने वाला)। यह शानदार कैलेण्डर न्यास संरक्षक डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (शिकागोलैण्ड) के सौजन्य से तैयार किया जा रहा है।

दिवेर युद्ध में सुल्तान खाँ को पछाड़ा मुगलों पर महाराणा प्रताप की निर्णायक विजय

चित्तौड़ पर अकबर का अधिकार होने पर महाराणा उदयसिंह ने गोगुन्दा को अपनी राजधानी बनाया था। वहीं पर २८ फरवरी १५७२ को उनका निधन हुआ। ज्येष्ठ पुत्र प्रताप के स्थान पर छोटे पुत्र जगमाल को उत्तराधिकारी बनाया गया। इसका सामन्तों ने विरोध किया और उन्होंने महादेव की बावड़ी, गोगुन्दा पर प्रताप का राज्याभिषेक किया। महाराणा प्रताप ने उसी समय अपनी मातृभूमि को मुक्त करवाने की भीषण प्रतिज्ञा की थी। अकबर ने महाराणा प्रताप को झुकाने के लिए कई संधि प्रस्ताव भेजे। महाराणा प्रताप संधि को टालते रहे साथ ही युद्ध की तैयारी करते रहे। १८ जून १५७६ को हल्दीघाटी में महाराणा प्रताप और मुगल सेना के बीच हुए युद्ध में महाराणा के वीर सैनिकों ने मुगलों को मौत के घाट उतार दिया किन्तु इस युद्ध में प्रताप के कई वीर सैनिक खेत रहे अतः वे कोल्यारी की पहाड़ियों में चले गए। फिर कुम्भलगढ़ और वहाँ से भी उन्हें हटना पड़ा तो वे चूलिया गाँव में रहने लगे।

भामाशाह का आगमन-वर्षों से युद्धरत महाराणा प्रताप आगे की रणनीति बना रहे थे किन्तु धनाभाव आड़े आ रहा था। दैवयोग

से उसी समय मालवा से धन लेकर भामाशाह चूलिया आये। उन्होंने सारा धन महाराणा प्रताप को समर्पित कर दिया, जो सेना को संगठित करने के काम आया।

मुगल थानों में दिवेर थाना अत्यधिक महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि मारवाड़, गोडवाड़ और अजमेर के रास्ते पर स्थित था। इसीलिए अकबर ने अपने काका सुल्तान खाँ को वहाँ का

थानेदार बनाया था। गुप्तचरों ने दिवेर की पूरी जानकारी प्राप्त कर उसी के अनुसार महाराणा प्रताप ने उस पर आक्रमण की गुप्त व्यूह रचना बनाई। उन्होंने विजयादशमी का शुभ समय नियत किया। १५७२ को विजयादशमी के दिन प्रताप की सेना ने युवराज अमरसिंह एवं भामाशाह के नेतृत्व में अचानक दिवेर पर आक्रमण कर उसे अपने अधिकार में ले लिया।

सुल्तान खाँ को भी भनक लग गई थी कि प्रताप रात्रि में आक्रमण करेंगे इसलिए अपने आसपास के शाही थानों से सैनिक दिवेर बुला लिए थे तथा अपनी सेना को सावधान रहने की हिदायत दी थी। अर्द्धरात्रि तक सभी सैनिक सजग रहे, किन्तु प्रताप का आक्रमण नहीं होने पर ढ़लती रात में सभी नींद में व्याकुल होकर असावधान हो गये।

महाराणा प्रताप ने योजनानुसार पौ फटने के पहले अपनी सेना को पहाड़ों में मोर्चा दिला दिया। प्रताप के दिवेर पर आक्रमण से सुल्तान खाँ और उसके सैनिक भी शीघ्र ही युद्ध के लिए आ डटे। सुल्तान खाँ हाथी पर सवार था। अँधेरे में उसे महाराणा की सेना स्पष्ट दिखाई नहीं दे रही थी। महाराणा की सेना को पीछे हटते देख वह भ्रम में पड़ गया और तेजी से आगे बढ़ा। उसे यह भी आभास नहीं हो पाया कि कब वह महाराणा के सैनिकों से घिर गया। महाराणा प्रताप के भाले से हाथी धराशायी हो गया इसलिए सुल्तान खाँ हाथी छोड़कर घोड़े पर सवार हुआ। अब उसका सामना युवराज अमर सिंह से हुआ। तलवार का वार बचाने के लिए सुल्तान खाँ ज्योंही नीचे झुका अमर सिंह के भाले का भारी-भरकम वार उस पर हुआ। जिरह बख्तर छेदते हुए भाला सुल्तान खाँ के आर-पार हो गया और वह जमीन पर गिर पड़ा। अमर सिंह युद्ध करते हुए आगे बढ़ गये। सेनानायक बहलोल खाँ महाराणा प्रताप के तलवार से वार से घोड़े सहित मारा गया। महाराणा के सैनिकों ने मुगलों के शवों से दिवेर को पाट दिया था।

उस वीर के दर्शन करायें- सुल्तान खाँ के सैनिकों ने उसके शरीर का भाला निकालने का भरसक प्रयास किया किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। महाराणा प्रताप को सुल्तान खाँ के

धराशायी होने की खबर लगी तो वे स्वयं वहाँ उपस्थित हुए। उसने महाराणा से विनीत भाव से कहा- 'मुझे उस वीर के दर्शन करायें, जिसने मुझे मारा।' सच्चा हिन्दू होने के कारण महाराणा प्रताप ने सुल्तान खाँ की विनय स्वीकार की और युद्धरत अमर सिंह को बुलवाया। महाराणा के कहने पर अमर सिंह ने एक झटके में सुल्तान के शरीर से भाला निकाला।

अमर सिंह को देखकर सुल्तान खाँ की मानसिक प्यास शांत हो गई। किन्तु अत्यधिक रक्तस्राव से दैहिक प्यास से तड़पता हुआ वह अंतिम साँसें ले रहा था। पानी माँगने पर महाराणा प्रताप ने गंगाजल से भरा कलश भिजवाया जिसे पीकर वह मृत्यु को प्राप्त हो गया।

चावण्ड बना राजधानी- महाराणा प्रताप ने अकबर के काका सुल्तान खाँ को मारकर दिवेर पर अधिकार कर लिया है, यह समाचार आग की तरह चारों और फैल गया। इससे मुगल थानों में भय व्याप्त हो गया। दिवेर के पास आमेट थाने पर भी सहज ही महाराणा का अधिकार हो गया। कुम्भलगढ़ का थानेदार व मुगल सैनिक अजमेर भाग गए थे। इस पर अधिकार कर महाराणा ने जावर पर कब्जा किया। छप्पन और बागड़ के पहाड़ों पर विजयी होकर महाराणा प्रताप चावण्ड पहुँचे। चावण्ड को अपनी राजधानी घोषित कर चामुण्डा माता का मंदिर एवं महल बनवाया।

कुछ दिन बाद डूँगरपुर और बाँसवाड़ा के राजाओं को अधीन किया। इस प्रकार एक के बाद एक सारे किले पुनः जीतकर महाराणा प्रताप ने मेवाड़ को मुगलों से स्वतंत्र कर अपनी प्रतिज्ञा पूरी की।

– साभार पाथेयकण

सबसे बड़ा है दरजा माँ का

और भी हैं सब रिश्ते नाते, सबसे सच्चा रिश्ता माँ का।
अपना क्या है, इस जीवन में, तन, मन, धन है सारा माँ का।।
धूप नहीं लग सकती उसको, जिसके सर पर साया माँ का।
माँ के पाँव तले जन्नत है, बेटा आँख का तारा माँ का।।
बेटे खातिर हर दुःख सहती, मन न कभी भी हारा माँ का।
भूल गया कैलाश सभी कुछ, भूल न पाया चेहरा माँ का।।

डॉ.कैलाश नाथ निगम, लखनऊ

सत्यार्थप्रकाश पहेली-४

रिक्त स्थान भरिये- ईश्वर के विभिन्न नाम याद करिये- पुरस्कार प्राप्त करिये

स	१		■	■		२ य	■	■	३	रु
■	य	४	■	५ ल		■	■	६	६ ङ्क	
७	प्त	■	८ म		८	व	■	९ स्व	९	

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जो सबका ज्ञान, सर्वसुख, पवित्रता, अनन्त, बलादि गुणों से युक्त है, इसलिये परमेश्वर का नाम है।
२. जो सब धर्मात्माओं, मुमुक्षुओं और शिष्टों को प्रसन्न करता और सब को कामना के योग्य है, इसलिये उस ईश्वर का नाम है।
३. जो सत्यधर्मप्रतिपादक सकल विद्यायुक्त वेदों का उपदेश करता, सृष्टि की आदि में अग्नि, वायु, आदित्य, अङ्गिरा और ब्रह्मादि गुरुओं का भी गुरु और जिसका नाश कभी नहीं होता, इसलिये उस परमेश्वर का नाम है।
४. जो सब जगत् के पदार्थों को संयुक्त करता है और सब विद्वानों का पूज्य है और ब्रह्मा से लेके सब ऋषिमुनियों का पूज्य था, है और होगा, इससे उस परमात्मा का नाम है।
५. जो सब चराचर जगत् को देखता, चिह्नित अर्थात् दृश्य बनाता, जैसे शरीर के नेत्र, ... तथा सबको देखता, सब शोभाओं की शोभा और जो वेदादिशास्त्र वा धार्मिक विद्वान् योगियों का लक्ष्य अर्थात् देखने योग्य है, इससे उस परमेश्वर का नाम है।
६. जो कल्याण अर्थात् सुख का करने हारा है, इससे उस ईश्वर का नाम है।
७. जो सत्योपदेशक सकलविद्यायुक्त सब धर्मात्माओं को प्राप्त होता और धर्मात्माओं से प्राप्त होने योग्य छल कपटादि से रहित है, इसलिये उस परमात्मा का नाम है।
८. जो महान् देवों का देव अर्थात् विद्वानों का भी विद्वान्, सूर्यादि पदार्थों का प्रकाशक है, इसलिये उस परमात्मा का नाम है।
९. जो आप से आप ही है, किसी से कभी उत्पन्न नहीं हुआ है, इससे उस परमात्मा का नाम है।

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- ''अनूठी, अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ'' एक वर्ष तक निःशुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जून २०१४

देश के लिए अति महत्वपूर्ण २१ सुझाव

विनोद बंसल

भारत ने अभी हाल ही में अपनी स्वतंत्रता की ६६वीं वर्षगाँठ तो मना ली किन्तु देशवासियों के मन में अनेक अनुत्तरित प्रश्न अब भी जैसे के तैसे खड़े हैं। क्या सच्चे माइने में हम स्वतंत्र हैं? क्या वर्तमान शासन व्यवस्था वास्तव में जनता द्वारा जनता के लिए है? क्या भारत के प्रत्येक नागरिक को रोटी कपड़ा, मकान, सुरक्षा, शिक्षा व रोजगार के साथ अपने स्वाभिमान के साथ जीने का अधिकार मिल सका है। आजादी के बाद हमने प्रगति तो बहुत की किन्तु अभी भी राजनीति में चहुँ ओर व्याप्त भ्रष्टाचार, अपराधीकरण तथा क्षुद्र राजनैतिक लालच से प्रेरित निर्णयों के कारण आम नागरिक त्राहिमाम् कर रहा है।

इन सभी समस्याओं की जड़ है लोकतंत्र के मन्दिर संसद में बडी संख्या में पहुँचने वाले दूषित चरित्र के निरंकुश शासक जो अपने 'स्व' की तो चिन्ता करते हैं किन्तु तंत्र (जनता) के प्रति प्रायः उदासीन ही रहते हैं। गरीबी, भुखमरी, कुपोषण, बेरोजगारी, अशिक्षा व असुरक्षा जैसी महामारियों से यदि देश को बचाना है तो हमें चुनाव सुधारों हेतु तत्काल प्रभावी कदम उठाने पड़ेंगे। अभी हाल ही में माननीय सर्वोच्च न्यायालय, इलाहाबाद उच्च न्यायालय तथा आर. टी. आई. ट्राइब्यूनल के ऐतिहासिक निर्णयों के अलावा चुनाव आयोग द्वारा भी अनेक सराहनीय कदम तो उठाए गए हैं, किन्तु इन सभी निर्णयों को निष्प्रभावी बनाने हेतु भी राजनैतिक दलों में एकजुटता देखी जा रही है। देश वासियों के हितों के विरुद्ध राजनेताओं की यह एकजुटता किसी गंभीर खतरे से कम नहीं आँकी जा सकती है। देश की राजनीति को शुचितापूर्ण बनाने हेतु निम्नांकित बिन्दु भारत के नागरिकों को इन सभी प्रकार की समस्याओं से मुक्ति दिलाने में मील के पत्थर साबित होंगे-

अ. चुनाव से पूर्व किए जाने वाले कार्य

१. मतदाता सूचियों की गहन छानबीन कर उसमें से फर्जी नाम हटाए जाएँ तथा जो मतदान योग्य नागरिक छूट गए हैं वे सभी शामिल किए जाएँ। किसी भी विदेशी नागरिक का नाम उसमें न हो इसकी पुख्ता व्यवस्था की जाए।

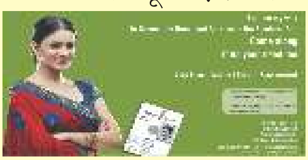

२. जाति, मत, पंथ, संप्रदाय, भाषा, धर्म व राज्य के आधार पर विभाजनकारी आँकड़ों के प्रसारण व प्रकाशन पर पूर्ण रोक के साथ प्रत्याशियों द्वारा इनके उपयोग पर प्रतिबंध हो। इससे देश के सामाजिक व धार्मिक ताने-बाने को कोई नुकसान न पहुँचे।

३. वोट डालने के अधिकार के साथ मतदाता को, उसके कर्तव्य का बोध भी कराया जाए जिससे अधिकाधिक मतदाता जागरूक होकर बड़ी संख्या में मतदान कर सकें। मतदान हेतु अनिवार्य छुट्टी की व्यवस्था तो कर दी किन्तु जब तक नियोक्ता अपने सभी कर्मचारियों की अंगुली देख कर यह सुनिश्चित न करे कि जिस कर्मचारी ने मतदान नहीं किया उसका वेतन काट दिया गया है, छुट्टी का कोई अर्थ नहीं है।

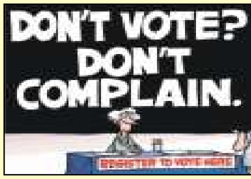

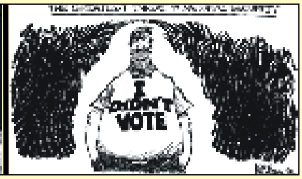

४. प्रत्येक मतदाता को अनिवार्य मतदान हेतु प्रेरित किया जाए। मतदान से जानबूझकर या निरंतर वंचित रहने वाले नागरिकों के विरुद्ध दंडात्मक कार्यवाही भी की जा सकती है।

५. मतदान की प्रणाली को सरल, सुगम व सर्वग्राह्य बनाने हेतु इलैक्ट्रोनिक वोटिंग मशीनों के अलावा ई-नेट वोटिंग जैसे प्रावधान करने चाहिए जिससे कोई भी और कहीं भी आसानी से मतदान कर सके। इनसे देश का तथाकथित उच्चवर्ग जैसे उद्योगपति, प्रशासनिक अधिकारी, बुद्धजीवी व बड़े व्यवसायियों के अलावा चुनाव प्रक्रिया में सहभागी अधिकारी व कर्मचारी भी आसानी से किंतु अनिवार्य रूप से मतदान कर सकेंगे।

६. अपराधियों या अपराधी प्रवृत्ति के व्यक्तियों को चुनाव लड़ने से रोका जाए।

७. चुनाव लड़ने हेतु न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता, अनिवार्य स्वास्थ्य जाँच, अधिकतम आयु सीमा निर्धारित हो।

८. किसी भी राजनेता को संवैधानिक पद दिये जाने से पूर्व उसकी वह सभी छानबीन की जानी चाहिए जो एक सरकारी

कर्मचारी की नियुक्ति हेतु आवश्यक है।

९. राजनैतिक दलों को आर टी आई के अन्तर्गत लाया जाए।

१०. प्रत्येक प्रत्याशी को एक न्यूनतम घोषणा पत्र और उसके पालनार्थ न्यूनतम मापदण्ड निश्चित किए जाएँ।

११. चुनावों से पूर्व किसी बड़ी लोक-लुभावन वोट लालची योजना की घोषणा सम्बन्धी बड़े-बड़े विज्ञापनों पर रोक लगे।

१२. सभी सरकारी विज्ञापनों (विशेषकर नेताओं के जन्म दिवस या पुण्य तिथियों के अवसर पर) में नेताओं की फोटो या उनका गुणगान नहीं हो। जिस फोटो में किसी नेता का फोटो या नाम हो, उसका खर्च उसी से लिया जाए। अन्यथा नाम के स्थान पर उसका पद ही पर्याप्त है।

ब. चुनावों के दौरान

१३. दुराचारी, अपराधी, अशिष्ट या अनचाहे सभी प्रत्याशियों को चुनाव से दूर रखने हेतु 'नो वोट' के गोपनीय मतदान की

व्यवस्था हो। एक निश्चित प्रतिशत से अधिक 'नो वोट' पड़ने पर सभी प्रत्याशी चुनाव में खड़े होने के लिए अयोग्य घोषित किए जाएँ।

१४. धन-बल के दुरुपयोग को रोकने तथा योग्य उम्मीदवार को चुनाव लड़ने हेतु सबल बनाने के लिए चुनाव का समस्त खर्च सरकार वहन करे।

१५. मतदान केन्द्र व निर्वाचन कार्यालयों की वीडियो रिकार्डिंग हो।

१६. प्रत्येक मतदाता को उससे सम्बन्धित प्रत्येक प्रत्याशी का सम्पूर्ण विवरण सरल ढंग से चुनाव आयोग द्वारा भेजा जाए जिससे मतदान से पूर्व सही व्यक्ति के चुनाव हेतु मतदाता को सहयोग मिल सके।

स. चुनावों के उपरान्त

१७. प्रत्येक निर्वाचित प्रतिनिधि के अनिवार्य बहुमुखी प्रशिक्षण की व्यवस्था हो जिसमें उससे सम्बन्धित कार्य का विस्तृत प्रशिक्षण दिया जाए।

१८. चुने हुए जन प्रतिनिधियों के कार्य का वार्षिक अंकेक्षण व मूल्यांकन करा रिपोर्ट सार्वजनिक की जानी चाहिए जिससे जनता अपने जन प्रतिनिधि के कार्य का सही सही दर्शन कर सके। इसमें आर्थिक पक्ष के साथ साथ जन प्रतिनिधि का सामाजिक चेहरा भी सामने आए कि वह कितनी बार जनता के बीच रहा और कितनी बार उसने जनता की आवाज सदन में उठाई।

१९. प्रतिवर्ष प्रत्येक जन प्रतिनिधि के स्वास्थ्य, कार्यक्षमता व नैतिकता की जाँच कर यह रिपोर्ट सार्वजनिक की जाए।

२०. जन प्रतिनिधि को अपराधी ठहराए जाने या सजा सुनाए जाने के तत्काल बाद उसको पदच्युत करने की व्यवस्था हो। इस कार्य की जाँच पड़ताल हेतु प्रत्येक राज्य में एक निगरानी तंत्र की व्यवस्था हो जिसमें राज्य के महाधिवक्ता, अभियोजन महा निदेशालय, सूचना व प्रसारण विभाग व मीडिया के प्रतिनिधि शामिल हों ।

२१. जिस सदन (यथा संसद, विधानसभा, विधान परिषद्) के लिए प्रत्याशी चुना जाए उससे अनुपस्थित रहने या जनता के बीच कार्य करने में अक्षम या उदासीन रहने पर जन प्रतिनिधि के विरुद्ध कार्यवाही की व्यवस्था हो। यानि, 'राइट टू रिकाल' की भी व्यवस्था हो।

भारतीय ग्रंथों में भी कहा गया है कि 'यथा राजा तथा प्रजा' अर्थात् जैसा राजा वैसी ही उसकी प्रजा। उपरोक्त सुझावों के सकारात्मक क्रियान्वयन हेतु प्रबुद्ध नागरिक मंच की ओर से एक अपील भी भारत के राष्ट्रपति तथा मुख्य चुनाव आयुक्त से की गई। यदि त्वरित कार्यवाही हुई तो न सिर्फ स्व-तंत्र की मजबूत नींव रख देश की दिशा व दशा दोनों ठीक होंगीं बल्कि भारत पुनः सोने की चिड़िया बन राम राज्य की ओर लौटेगा।

३२९, संत नगर, ईस्ट ऑफ कैलाश,
नई दिल्ली-६५, चलभाष-०९८१०९४९१०९

वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्य में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएँ-

- धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।
- पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।
- मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) में है।
- मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।
- सुन्दर गेटअप "५.६×९.०" पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपरबैक।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०

३५०० रु. सैंकड़ा शीघ्र मंगवाएँ

'वेद और सत्यार्थ प्रकाश'

गतांक से आगे.........

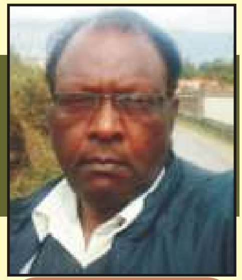

मनमोहन कुमार आर्य

ईश्वर ने अपने नित्य ज्ञान व सामर्थ्य से ब्रह्माण्ड की रचना की। यह ब्रह्माण्ड कैसा है कि जिसको आज के वैज्ञानिक भी पूरा जान नहीं पाये। इतनी चर्चा हम अवश्य कर लें कि रात्रि में जो तारे दिखाई देते हैं, यह सब हमारे सूर्य की ही तरह के

सूर्य हैं। हो सकता है कि कुछ सूर्य हमारे इस सूर्य से भी कहीं अधिक बड़े हों। वैज्ञानिक मानते हैं कि सृष्टि में कई बड़े-बड़े सूर्य इतनी अधिक दूरी पर हैं जिनका प्रकाश इस पृथिवी पर लाखों वर्ष की यात्रा करके पहुँचता है। ऐसे भी तारों के होने की सम्भावना है, कि सृष्टि को बने १,९६,०८,५३,११५ वर्ष पूर्ण होने पर भी, उनका प्रकाश अभी तक दूरी के कारण पृथिवी पर पहुँच नहीं सका है, आने वाले समय में वह पहुँचेगा। इससे हमारी पृथिवी व अनेक सूर्य लोकों की परस्पर दूरी का पता चलता है। इस व ऐसे कारणों से वेदों ने व हमारे प्राचीन ऋषियों ने ईश्वर को सर्वव्यापक, ब्रह्म, सृष्टिकर्ता आदि कहा है। वह सर्वव्यापक ईश्वर कैसा है? विचार करने पर पता चलता है कि उसका न कोई ओर है और न कोई छोर अर्थात् वह आदि व अन्त से रहित है। इस बात को समझना जरा कठिन है। निरन्तर स्वाध्याय करते रहने व चिन्तन-मनन एवं विचार करते रहने से यह बात स्वतः बुद्धि में बैठ जाती है। इसके साथ वह ईश्वर सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान भी है। सर्वज्ञ का अर्थ है ज्ञान की पराकाष्ठा। ज्ञान की पराकाष्ठा कभी भी एकदेशी सत्ता में नहीं हो सकती, वह केवल सर्वव्यापक सत्ता में ही होती है। सर्वव्यापक सत्ता का मूर्तिमान होना असम्भव है, वह केवल निराकार ही हो सकती है। इसके साथ जिस सत्ता में इतने गुण हों, वह अत्यन्त सूक्ष्म ही हो सकती है और वस्तुतः है भी। ज्ञान केवल चेतन सत्ता को ही होता है अर्थात् उसमें विहित व निहित होता है। चेतन सत्ता का एक गुण उसका ज्ञाननिहित व ज्ञान प्राप्ति में समर्थ होना है तो उसका दूसरा स्वभाविक गुण क्रिया या कर्म से युक्त होना है। ईश्वर में ज्ञान है तो कर्म भी है और कर्म के होने से वह खाली, आलसी, निकम्मा या पुरुषार्थहीन कभी नहीं होता। इसी कारण वह सृष्टि को बनाता है, चलाता है, पुरानी व बेकार होने पर उसकी प्रलय करता है। फिर पुनः उस प्रलय की हुई सृष्टि से नई सृष्टि बनाता है। इस प्रकार से वह सतत् कर्मों को करते हुए व्यस्त रहता है। वेदों में उसने स्वयं के बारे में बताते हुए स्वयं को सहस्रशीर्षा, सहस्रबाहु व शतक्रतो आदि कहा है। यह वस्तुतः सत्य है। यहाँ शत व सहस्र का अर्थ असंख्य या अनन्त है।

ईश्वर ने हमारी मातृभूमि व भूमि माता को बनाया तथा हमें जन्म दिया। भूमि में नाना प्रकार के उपयोगी पदार्थ बनाकर सारी दुनिया के मानवों को निःशुल्क प्रदान किये। हमारा शरीर ईश्वर की ही रचना है। यह उसी का चिन्तन है कि हमें उसने देखने, सुनने, बोलने, छूने व सूँघने के लिए इन्द्रियाँ प्रदान कीं व भोजन के लिए तरह-तरह के अत्यन्त स्वादिष्ट एवं पौष्टिक पदार्थ बनाकर दिये हैं। जिस ईश्वर ने इतना कुछ दिया है, क्या उसने सृष्टि के आरम्भ में हमें भाषा व ज्ञान नहीं दिया था? हमारा चिन्तन कहता है कि जिस ईश्वर ने हमारे सिर, आँख, नाक, कान, गला, मुँह व त्वचा को बनाया है उसको यह ज्ञान भी था कि मनुष्य को इन वस्तुओं की परम आवश्यकता होगी। बिना इसके उसका काम नहीं चलेगा। उसने शरीर के अन्दर हमारे लिए मन व बुद्धि भी बनाई है। यदि ईश्वर को बुद्धि बनाने का ज्ञान था तो उसे यह ज्ञान तो अवश्य ही था कि मनुष्य मुँह से बोलेगा, कान से सुनेगा तो उसे भाषा की आवश्यकता भी होगी। भाषा के साथ-साथ उसे ज्ञान की भी आवश्यकता है जिससे वह सत्य व असत्य का निर्धारण कर सत्य को ग्रहण व असत्य को त्याग कर सके। अतः ईश्वर ने ही सृष्टि के आरम्भ में भाषा के साथ ज्ञान भी मनुष्यों को प्रदान किया था। इस ज्ञान को देने की ईश्वर की प्रणाली वही है जिसका प्रकाश महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों में किया है तथा इस लेख के पूर्व भाग में किया गया है। यदि ईश्वर भाषा व वेदों का ज्ञान नहीं देता तो उसका सृष्टि व प्राणी-मात्र की रचना करना व्यर्थ हो जाता। जो लोग कहते हैं कि ईश्वर ने भाषा व वेदों का ज्ञान नहीं दिया, हमें लगता है कि वह लोग स्वयं को विज्ञ व ईश्वर को मूर्ख समझते हैं।

आत्मा नित्य व अनादि है। हमारे अनन्त व असंख्य जन्म व्यतीत हो चुके हैं। हम प्रायः सभी जीव-योनियों में अनेकों-अनेक बार रहे हैं। अनेक बार हमारा मोक्ष भी हुआ है। यह वेद भी, हम जब-२ मनुष्य बने, उनमें से अधिकांश बार हमने सुने, देखे, व पढ़े हैं। आज फिर इन्हें देखने का सुअवसर परमात्मा व महर्षि दयानन्द की कृपा से प्राप्त हुआ है। हमें पूरी तन्मयता से वेदों का अध्ययन कर तथा मन्त्रार्थों में निहित रहस्यों को जानकर उनके अनुरूप अपना आचरण बनाकर व इसके साथ-साथ ध्यान-चिन्तन व ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव कर, इस जीवन को सार्थक बनाना चाहिये। अन्य प्रकार से जीवन जीने में ऐन्द्रिक, भौतिक व विषय सुख तो मिलेगा, परन्तु उससे आत्मा सुखी कदापि नहीं होगा। आत्मा की अवहेलना आगे चलकर महँगी पड़ेगी। इसका कारण यह है कि प्रत्येक सुख में कई दुःख जुड़े रहते हैं। सुखों की प्राप्ति में पुरुषार्थ कर धन व साधन प्राप्त करने में दुःख, सुखों के भोगने के बाद फिर पूर्व की स्थिति आने पर दुःख तथा सुख का परिणाम दुःख होता ही है। अधिक सुख भोगने से इन्द्रियों व शरीर के शिथिल पड़ने व रोग आदि के होने से भी दुःख होता है जिसे परिणाम दुःख कहते हैं। अतः मित्रों! सावधान, आत्मा को जानो, पहचानो, ईश्वर की भक्ति, उपासना को अपनाकर आत्मा को संतृप्त व सन्तुष्ट कर जीवन को सफल करो।

सत्यार्थ प्रकाश आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती रचित एक आर्ष ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ का पहला संस्करण सन् १८७५ में प्रकाशित हुआ था। इसमें मुद्रण आदि की कुछ त्रुटियों और अन्त के दो समुल्लास न छपने के कारण महर्षि दयानन्द ने इसका संशोधित संस्करण तैयार किया जो उनकी ३० अक्तूबर, सन् १८८३ को मृत्यु के पश्चात् सन् १८८४ में प्रकाशित हुआ था। इसमें १४ समुल्लास हैं जिनमें ईश्वर के स्वरूप व उसके १०० नामों की व्याख्या से लेकर विवाह, माता-पिता के कर्तव्य, बालकों की शिक्षा, गृहस्थ जीवन के कर्तव्य, वानप्रस्थ व संन्यास आश्रम का स्वरूप व उनसे जुड़े विषय, वेद सम्मत राजधर्म व शासन के संचालन विषयक जानकारी, जीवात्मा, परमात्मा का स्वरूप व विभिन्न विषय, वेद सम्बन्धी विषय, मुक्ति व मोक्ष का सप्रमाण वर्णन, आर्यावर्तीय मत-मतान्तरों का वर्णन व उनका खण्डन-मण्डन व अन्तिम ३ समुल्लासों में नास्तिक चारवाक, बौद्ध व जैन मत समीक्षा और उसके पश्चात् ईसाई मत तथा कुरआन की समीक्षा व परीक्षा की गई है।

सत्यार्थ प्रकाश जैसा ग्रन्थ संसार में दूसरा कोई नहीं है। इसका कारण है कि जिसके पास सत्य होता है वही सबसे अधिक निर्भीक, साहसी तथा बलवान होता है। जब तक सत्यार्थ प्रकाश की रचना व प्रकाशन नहीं हुआ था, सभी मत अपने मत के भ्रान्त व सृष्टि-क्रम के विरुद्ध नियमों व सिद्धान्तों का जोर-शोर से प्रचार करते थे। यह इतिहास से सिद्ध तथ्य है कि भारत में सर्वत्र लोगों को प्रलोभन, डर, छद्म रूप से सेवा करके, छल, प्रंपच व तलवार से भोले-भाले लोगों का धर्मान्तरण किया गया है। आज धर्म के बारे में वैदिक-धर्मी आर्य समाजियों के पास समुचित जानकारी है, अब कोई भी तथाकथित धर्म, मत, मजहब, गुरुडम वाले अपनी शेखी नहीं बघार सकते। आर्य समाज ने समय-समय पर मत-मतान्तरों के लोगों व विद्वानों से जो प्रश्न किए थे उनका उत्तर भी देने के लिए कोई आगे नहीं आता। आर्य समाज के विद्वान् वेदों व वैदिक-साहित्य के आधार पर जिन सच्चाईयों को सामने रख कर संसार के मतों के प्रमुख विद्वानों को उसे स्वीकार करने के लिए प्रेरणा देते हैं, उसे भी अनसुना कर दिया जाता है। इसका एक ही कारण है कि सभी मतों को अपने मत की दुर्बलताओं का ज्ञान हो गया है। अतः वह वाद, वार्तालाप, शंका-समाधान व शास्त्रार्थ कर सत्य को जानना, समझना नहीं चाहते क्योंकि ऐसा करने पर उन्हें विवश होकर सत्य को स्वीकार करना पड़ सकता है। वह यह भी नहीं चाहते कि उनके मत का कोई व्यक्ति अपने मत को त्याग कर वैदिक धर्मी बने। इसका कारण उनका अपने मिथ्या विचारों, मान्यताओं व सिद्धान्तों से अनावश्यक व अनुचित लगाव, मोह व राग है। ऐसा करके वह अपना वर्तमान जन्म व भावी जन्म बिगाड़ रहे हैं। यह जन्म हमें व उन्हें सत्य व असत्य के निर्णय करने के लिए मिला है। अज्ञानता से पूर्ण जीवन व्यतीत कर स्वार्थ सिद्ध करने के लिए नहीं। ऐसा करके वह अपना भावी जीवन बिगाड़ रहे हैं और अपने साथ अपने अनुयायियों के साथ भी अन्याय कर रहे हैं। ईश्वर की दृष्टि में यह इसलिए छिपा हुआ नहीं है कि वह सर्वान्तर्यामी है। वह सब कुछ देख और समझ रहा है और यथासमय इसका दण्ड सभी अनुचित कर्म व कार्य करने वालों को मिलेगा। हम विचार करने पर यह भी अनुभव करते हैं कि दुनिया के लोग वैदिक मत को भले ही न मानें परन्तु कम से कम वह वैदिक धर्म के पैरोकार आर्य समाज के विद्वानों की युक्तियों, कथनों तथा प्रमाणों पर दृष्टि तो डालें, निष्पक्ष रूप से विचार करें और देखें कि सत्य क्या है? वैदिक मत की मान्यतायें व सिद्धान्त सत्य व उपादेय हैं अथवा उनके मत की मान्यतायें व सिद्धान्त सत्य व उपादेय हैं? यदि वह सत्य को जानेंगे ही नहीं तो यह दोहरे अपराध की श्रेणी में आ सकता है जिस कारण उन्हें अधिक दुःख भोगना पड़ सकता है। उन्हीं

को ही नहीं अपितु किसी भी व्यक्ति को, चाहे फिर वह आर्य समाज का अनुयायी ही क्यों न हो, वह भी कर्म-फल व्यवस्था के अनुसार दण्ड का भागी होने से दुःख भोगेगा। चिन्तन, विचार, ऊहापोह व वैदिक प्रमाणों से यह जाना गया है कि ईश्वर के यहाँ दया व करुणा तो है परन्तु पक्षपात व अन्याय नहीं है। वह ऐसा न्याय करता है जो न कम होता न अधिक। इसका प्रमाण चाहिये तो वह भी दिखा देते हैं। जन्म से एक व्यक्ति किसी निर्धन व अभावग्रस्त परिवार में जन्म लेता है व दूसरा एक धनी व साधन सम्पन्न परिवार में। इसका कारण हमारे प्रतिपक्षी हमें बतायें? यही नहीं अनेक जीवात्माओं को तो मनुष्य जन्म भी नहीं मिलता, वह पशु, पक्षी आदि क्यों बनाये गये हैं? हमारा उत्तर है कि वह पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि योनियों में अपने इस जन्म से पूर्व के मनुष्य जन्म के कर्मानुसार जन्म व सुख-दुख पाते हैं। यह समाज में सर्वत्र प्रत्यक्ष है।

पशु व अन्य निम्न योनियाँ भोग योनियाँ हैं। इन योनियों में किए गये कर्मों का फल अगले जन्मों में नहीं मिलता क्योंकि उन्हें कर्मों की स्वतन्त्रता नहीं है। फल केवल मनुष्य जन्म में किए गये कर्मों का ही मिलता है जिसका कारण मनुष्य को ईश्वर ने कर्म करने में स्वतन्त्र बनाया है और फल भोगने में वह परतन्त्र है। यह सब बातें वेद के आधार पर हैं जिनका ज्ञान आम व साधारण मनुष्य को सत्यार्थ प्रकाश से होता है। वेद की प्रत्येक बात युक्ति, तर्क, ऊहापोह, चिन्तन व सृष्टिक्रम के अनुकूल होने से भी सिद्ध होती है।

अतः सत्यार्थ प्रकाश एक ऐसा ग्रन्थ है जो वेदों के स्वरूप, उनके महत्व, उनके उपयोग, उपादेयता व प्रासंगिकता को बताता है। सत्यार्थ प्रकाश वेद को देखने के लिए एक प्रकार से नेत्रों का कार्य करता है। यदि आँख न हो तो देख नहीं पाते, इसी प्रकार से यदि सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ महर्षि दयानन्द ने न बनाया होता तो सामान्य जन वेद के यथार्थ स्वरूप व महत्व को न जान पाते और साम्प्रदायिक विधर्मी मनमानी कर लोगों का धर्मान्तरण करते। यदि सत्यार्थ प्रकाश न लिखा गया होता तो आज संसार में जो धार्मिक क्रान्ति आयी है, वह कदापि न आई होती। सत्यार्थ प्रकाश के कारण ही आज हमारे प्रिय दलित भाईयों को वेदाध्ययन का अधिकार प्राप्त हुआ है। अनेक दलित भाई आर्य समाज में आकर पण्डित बन चुके हैं। वेदों का अध्ययन कराते हैं। पुरोहित व बड़े-बड़े यज्ञों के यजमान व ब्रह्मा बनते हैं। आर्य समाज की क्रान्ति यहाँ तक सफल हुई है कि जिन भाईयों व बहिनों को वेद पढ़ने, सुनने व मन्त्रों का पाठ करने का अधिकार हमारे अज्ञानी पौराणिक भाईयों ने छीन लिया था, उनमें से कई दलित बन्धु व स्त्रियाँ आज वेदों के आचार्य, प्रवक्ता व वेदभाष्यकार हैं। यहाँ तक कि कुछ मुस्लिम बहिनों ने भी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में संघर्ष कर वेदाधिकार प्राप्त किया और वेद पढ़े। ईश्वर अपने पुत्रों की इस योग्यता पर प्रसन्न होकर महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के विद्वानों को जिन्होंने गुरुकुलों की स्थापना कर उनका संचालन किया व कर रहे हैं, उन्हें अपना आशीष प्रदान कर रहे हैं और मौन रूप से प्रसन्न होकर कह रहे हैं कि मेरे वास्तविक उत्तराधिकारी आर्य समाज के सच्चे व निःस्वार्थ भाव से कार्य करने वाले सदस्य, अधिकारी व विद्वान् हैं। स्वामी श्रद्धानन्द, पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, पं. युधिष्ठिर मीमांसक, पं. जगदेव सिंह सिद्धान्ती, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, आचार्या प्रज्ञादेवी, आचार्या मेधादेवी, आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा, आचार्या नन्दिता शास्त्री आदि अनेक विद्वान् व विदुषी बहनें हैं। हम यहाँ यह भी कहना चाहते हैं कि पुरुष ही नहीं आर्य समाज में हमारी बहनें व मातायें भी पुरुषों से पीछे नहीं हैं। आज वेद-विदुषी बहनें तो आर्य समाज में इतनी हैं कि उनकी गणना करना सम्भव नहीं है। इसका श्रेय सत्यार्थ प्रकाश को सर्वाधिक है जो वेदों का महत्व जन सामान्य में प्रकट करता है।

इस लेख में ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेद के महत्व व इसको जन-जन तक पहुँचाने में सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका व उसके प्रभाव को अंकित करने का प्रयास किया गया है। लेख की उपादेयता का मूल्यांकन सुविज्ञ पाठकों के हाथों में है।

१९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१
फोन- ०९४१२९८५१२१

माता शीला सेठी, न्यूजर्सी

आपकी प्रिय पत्रिका को संबल प्रदान करने हेतु इन बहिनों ने संरक्षक सदस्यता ग्रहण की है। अनेकशः धन्यवाद

-भवानीदास आर्य,
प्रबन्ध सम्पादक

श्रीमती सुमन सूद, सोलन

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए

इस हेतु अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश एक बार अवश्य पढ़ें।

अविद्या

स्वर्ग-नरक स्थान विशेष हैं जो मृत्यु पश्चात् तुरन्त, देर से अथवा दिन विशेष को प्राप्य हैं। ईश्वरेच्छानुसार स्वर्ग/बहिश्त/जन्नत में नाना प्रकार के भौतिक सुख साधन प्राप्य हैं। अन्य मतानुसार यथा पवित्र शराब, चाँदी के कंगन, मोती के वर्ण वाले लड़के, अच्छी आँखों वाली औरतें, सोने के तारों से बुने गए पलङ्ग, मेवे, पसन्दीदा गोश्त, दूध, पानी, शहद और शराब की नहरें उपलब्ध हैं, तथा नरक में नारकीय यातना।

विद्या

वास्तविकता है

१. स्वर्ग-नरक पृथक् से कोई स्थल नहीं हैं। स्वर्ग भी यहीं है, नरक भी।
२. स्वर्ग नाम सुख विशेष भोग और उसकी सामग्री की प्राप्ति का है।
३. नरक जो दुःख विशेष भोग और उसकी सामग्री को प्राप्त होना है।

सत्यार्थप्रकाश स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश

रक्त दान का कोई विकल्प नहीं

जिला आर्य सभा कोटा के तत्वावधान में शहीद दिवस के अवसर पर डी.ए.वी. स्कूल-तलवण्डी, कोटा में विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ.रमेशचन्द गुप्ता, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, यू.एस.ए. (न्यूजर्सी) ने कहा कि व्यक्ति के जीवन-रक्षण में रक्तदान का कोई विकल्प नहीं है। प्रचार सचिव अरविन्द पाण्डेय ने बताया कि कृष्णा रोटरी ब्लड बैंक की डॉ.सरोज गुप्ता के सहयोग से ६३ यूनिट रक्त इकट्ठा किया गया। - अर्जुन देव चड्ढ़ा

दक्षिण अफ्रीका में सामवेद पारायण यज्ञ

दक्षिण अफ्रीका के रस्टनबर्ग शहर में श्री दयानन्द शर्मा जी के निवास स्थान पर गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ से पधारे तपोनिष्ठ, सन्तशिरोमणि पूज्यपाद स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व में १५ मार्च २०१४ को सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति तथा उनके छः पौत्रों चि. भारत, यश, केतन, वंश, संस्कार एवं ध्रुव का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न हुआ। सभी गणमान्य आगन्तुकों ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर संस्कारों के महत्व को जाना। पूज्य स्वामी जी ने संस्कारों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इसको वैदिक संस्कृति का अनिवार्य अंग बताया। जिसको सुनकर उपस्थित सभी आगंतुकों पर इनका बहुत प्रभाव पड़ा, साथ ही भारतीय संस्कृति के प्रति आकर्षण में भी वृद्धि हुयी।

दयानन्द संस्थान में भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया

'विश्व तथा राष्ट्र की चुनौतियों का समाधान वैदिक दर्शन में ही विद्यमान है' इस विषय पर श्री विद्यासागर वर्मा, पूर्व राजदूत ने महात्मा वेदभिक्षु जयन्ती समारोह सप्ताह के अवसर पर विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर डॉ. श्याम सिंह शशि, आचार्य वीरेन्द्र विक्रम, श्री सत्यानन्द आर्य, श्री माया प्रकाश त्यागी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने भी अपने विचार रखे। - कृष्णकान्त

१०० कन्याओं को गर्मशॉल ओढ़ाए

पिण्डवाड़ा के निकटवर्ती कांटल स्थित मनन आश्रम में स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती ने हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी मकर संक्रान्ति त्यौहार धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर स्वामी जी द्वारा कस्तूरबा गाँधी कन्या गुरुकुल, वरली की १०० कन्याओं को गर्मशॉल भेंट कर आशीर्वाद दिया गया।

इस अवसर पर आयकर अधिकारी, एस.डी.एम विनय पाठक, तहसीलदार चैन सिंह चंपावत, लेहर भारतीजी, आबूराज सेवादल सेवा मंडल अध्यक्ष, तीर्थगिरी जी, महामंत्री, रेवानाथ जी महाराज मार्कण्डेय धाम, कान्तिला खत्री, पूनमचन्द सोलंकी, अशोक व्यास आदि उपस्थित थे। प्रातः १०.३० से दो घंटे हवन यज्ञ का कार्यक्रम हुआ। आगन्तुक अतिथियों ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। समारोह के अलावा भी आदिवासी क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार के दौरान आदिवासी परिवारों को १०० शॉलें भी दीं व सामूहिक भोजन भी करवाया। नशा मुक्ति, व्यसन मुक्ति, पाखण्डों का खण्डन तथा धर्म व शिक्षा का प्रचार भी किया गया।

ऋषि बोधोत्सव पर्व मनाया

आर्य समाज, नागदा, जिला उज्जैन के तत्वावधान में ऋषि बोधोत्सव सोत्साह मनाया गया। डॉ. लक्ष्मीनारायण जी सत्यार्थी ने इस अवसर पर अपना उद्बोधन प्रस्तुत किया। श्री सेवाराम पटेल, रमेश चन्देल, जगदीश पांचाल, रामसिंह पटेल, अग्निवेश पाण्डेय, जयप्रकाश सोनी, भगवती लाल आदि ने समारोह में शिरकत की।

- भँवर लाल पांचाल, सूचना प्रमुख

प्रवेश सूचना

आर्य विद्या सभा, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार द्वारा संचालित आधुनिक सुविधाओं सहित आवासीय विद्यालय (१०+२) में केवल छात्रों के लिए एवं कन्या गुरुकुल, देहरादून में केवल कन्याओं के लिए कक्षा १ से ६ तक एवं कक्षा ११ में प्रवेश प्रारम्भ है। वैदिक संस्कारों पर आधारित दिनचर्या, एनसीईआरटी पाठ्यक्रम एवं छात्राओं के सर्वांगीण विकास को करने वाली संस्था में अवश्य प्रवेश लें। २० अप्रैल २०१४ से २० जुलाई २०१४ तक प्रवेश अवधि है।

बालकों के प्रवेश हेतु सम्पर्क सूत्र ०६६२७०१६८७२
बालिकाओं के प्रवेश हेतु सम्पर्क सूत्र ०६७६०१८३५५०२

आर्य समाज अहमदाबाद में सुन्दर कार्यक्रम

दिनांक २३ मार्च २०१४ को आर्य समाज, अहमदाबाद द्वारा शहीद वीर मंगल पाण्डे ऑडिटोरियम में प्रेरक कार्यक्रम रखा गया जिसमें स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक द्वारा 'गृहस्थ जीवन को सुखी कैसे बनायें' विषय पर सुन्दर उद्बोधन प्रदान किया गया।

प्रान्तीय योग - व्यायाम प्रशिक्षण शिविर व व्यक्तित्व निर्माण शिविर

आर्यवीर दल, राजस्थान के नेतृत्व में दिनांक २४ मई से १ जून २०१४ तक उक्त शिविर का आयोजन विद्या कॉलेज, पालड़ी, भीलवाड़ा में किया जा रहा है। शिविर के संरक्षक आर्य समाज भीलवाड़ा के प्रधान श्री विजय शर्मा ने बताया कि शिविर का उद्घाटन ध्वजारोहण के साथ २४ मई २०१४ को सायं ५.०० बजे होगा और समापन आर्यवीरों के भव्य व्यायाम प्रदर्शन के साथ १ जून २०१४ रविवार को होगा। श्री विजय शर्मा ने सभी आर्यवीरों को इस शिविर में भाग लेने के लिए निवेदन करते हुए कहा कि आत्मरक्षा के लिए, स्वास्थ्य रक्षा के लिए, आत्मिक उन्नति के लिए, युवाशक्ति में विनम्रता तथा शौर्य के भाव साथ-साथ जागृत करने के लिए सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिए इस शिविर में अवश्य भाग लेना चाहिए। विद्या कॉलेज के निदेशक श्री अशोक चौधरी, श्रीमती गीता चौधरी ने स्थान प्रदान कर सहयोग दिया है। आर्यवीर दल के प्रान्तीय संचालक श्री सत्यवीर आर्य ने बताया कि इस शिविर में प्रवेश शुल्क ४०० रु. रखा गया है। शिविरार्थी की आयु कम से कम १३-१४ वर्ष होनी चाहिए तथा शिविरार्थी को २४ मई सायं ५.०० बजे तक शिविर स्थल पर पहुँचना चाहिए। - सम्पर्क सूत्र- देवेन्द्रशास्त्री, मोबाइल-९३५२५४७२५८

२५१ कुण्डीय विराट यज्ञ सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के नेतृत्व में २४, २५ व २६ जनवरी को २५१ कुण्डीय विराट विश्वशांति महायज्ञ एवं अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशाल शोभायात्रा का भी आयोजन किया गया। - डॉ. अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष

हलचल

गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास का ५४वां वार्षिकोत्सव

गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास राउरकेला का ५४ वां वार्षिकोत्सव पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती के सान्निध्य में दिनांक २६ फरवरी से २८ फरवरी २०१४ तक सम्पन्न हुआ। स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती, स्वामी सोमवेश जी, स्वामी आत्मानन्द सरस्वती, स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी, स्वामी सुधानन्द जी आदि ने अपने आशीर्वचन से उत्सव की शोभा को द्विगुणित किया।

पंडित लेखराम बलिदान दिवस मनाया गया

आर्य समाज,रामपुरा कोटा द्वारा संचालित मातृ सेवा सदन बालिका विद्यालय के प्रांगण में उक्त कार्यक्रम सोत्साह मनाया गया। इस अवसर पर वैदिक विद्वान् श्री शिवनारायण उपाध्याय तथा श्री इन्द्रकुमार सक्सेना ने पंडित लेखराम जी के जीवन पर प्रकाश डाला। पूर्णिमा सत्संग समिति के संरक्षक श्री राजेन्द्र सक्सेना, श्री मूलचन्द तोषनीवाल, श्री राजेन्द्र आर्य, प्रेमनाथ कौशल आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। श्री पी.सी.मित्तल ने कुशल संचालन किया। - डी.पी.मिश्रा, व्यवस्थापक

श्री अर्जुन देव चड्ढ़ा को राष्ट्रीय गौरव सम्मान

जिला आर्य सभा, कोटा के प्रधान श्री अर्जुन देव चड्ढ़ा को नाथद्वारा साहित्य कला मंडल सभागार में उनके द्वारा की जा रही सामाजिक सेवाओं को ध्यान में रख राष्ट्रीय गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया। सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से भी श्री चड्ढ़ा को बधाई एवं शुभकामनाएँ।

राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट का स्तुत्य कार्य

उक्त ट्रस्ट के मेनेजिंग ट्रस्टी व आर्य जगत् के सम्मानित दानवीर राव हरिश्चन्द जी ट्रस्ट के माध्यम से प्रतिवर्ष लाखों रु. की राशि से आर्य जगत् की प्रतिभाओं को सम्मानित करते रहते हैं। यह अत्यन्त आवश्यक व पवित्र कार्य है। गत वर्ष आपके द्वारा आचार्य प्रद्युम्न जी, स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक, स्वामी प्रणवानन्द जी व आचार्य विजयपाल योगार्थी को एक-एक लाख रु. के आर्य रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त श्री ओमप्रकाश वर्मा, भजनोपदेशक, श्री सुन्दर लाल कथुरिया, पंडित शोभाराम, श्री विनोद चन्द्र विद्यालंकार, आचार्य विशिकेशन शास्त्री को २१-२१ हजार के आर्य विभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया। माननीय राव साहब ने कुल मिलाकर लगभग १० लाख रु. की सहायता आर्य विद्वानों व आर्य संस्थाओं को दी।

नवसस्येष्टि पर्व मनाया गया

आर्य समाज, रेलवे कॉलोनी, कोटा जंक्शन में त्रिदिवसीय वासन्ती नवसस्येष्टि पर्व मनाया गया। इस अवसर पर वैदिक विद्वान् आचार्य अग्निमित्र, पंडित हरीशचन्द्र विद्यावाचस्पति ने जहाँ प्रेरणादायी उद्‌बोधन प्रदान किए, वहीं पंडित सुखपाल आर्य ने अपने भजनोपदेश के माध्यम से आह्लादित किया। - करण सिंह आर्य,कोटा जंक्शन

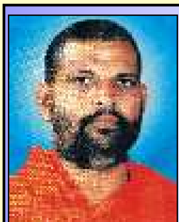

वैदुष्य, वैराग्य, फकीरी, सौम्यता, समर्पण, निष्ठा, त्याग, सेवा भावना की प्रतिमूर्ति पूज्य आचार्य स्वदेश जी को आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के प्रधान पद पर निर्वाचित होने पर शतशः बधाई। - अशोक आर्य

प्रतिस्वर

मान्यवर! मैं आपकी अत्यन्त हृदय से आभारी हूँ कि आप आर्यसमाजी विचारधारा को सत्यार्थ सौरभ के माध्यम से पुनः प्रचारित कर रहे हैं। खेद का विषय है कि युवा वर्ग पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति का अन्धानुकरण करने में संलग्न है और भारतीय संस्कृति को केवल विदेशी पर्यटकों के समक्ष नृत्य एवं संगीत के माध्यम से प्रस्तुत कर अपने भारतीय होने पर गर्व अनुभव करता है। - रचना चौहान

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - १ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १** के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं। - श्री सीताराम गाढ़वाला, बीकानेर, श्री महेशचन्द्र, बीकानेर, श्री रत्न प्रकाश इन्द्रमोहन आर्य, किल्लेधारुर, महाराष्ट्र, श्री रेवन्तराम चौधरी, बीकानेर, श्री मानसिंह आर्य, विजयनगर, कविता चन्देल, बीकानेर, श्री ओमप्रकाश आर्य, बरेली, रचना चौहान, देहरादून, श्री ऋतभ् आर्य, गाजियाबाद, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, दिल्ली। इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी।

आर्यसमाज हिरण मगरी में विविधि कार्यक्रम

आर्यसमाज हिरणमगरी, उदयपुर में नवसंवत्सर एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर प्रातः प्रभातफेरी के पश्चात् सत्संग सभा का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री नरेश बंसल ने की। मुख्य वक्ता श्री अशोक आर्य कार्यकरी अध्यक्ष श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास ने अपने उद्‌बोधन में आर्यसमाज के नवें व दसवें नियम की मनोहारी व्याख्या करते हुए संगठन व समष्टि के महत्व को उकेरित किया। उन्होंने जोर दिया कि समाज के बिना व्यक्ति और व्यक्ति के बिना समाज नहीं चल सकता। व्यक्ति की उन्नति समाज से और समाज की उन्नति व्यक्ति से होती है। इससे पूर्व पं. अनन्तदेव शर्मा के पौरोहित्य में देवयज्ञ सम्पन्न हुआ। आर्यसमाज के प्रधान श्री भँवर लाल आर्य, डॉ. शारदा गुप्ता, श्री प्रेमनारायण जायसवाल, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, महर्षि दयानन्द कन्या विद्यालय के मंत्री कृष्ण कुमार सोनी, कोषाध्यक्ष इन्द्र सिंह राणावत आदि ने अतिथियों का स्वागत किया। मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा ने आभार व्यक्त किया।

रामनवमी के अवसर पर समाज में उत्सव मनाया गया जिसमें श्री विनोद राठौड़, श्री कृष्ण कुमार सोनी, श्रीमती सुमन उज्जवल, श्रीमती ललिता यदुवंशी, श्री हीरालाल आर्य, रविन्द्र राठौड़, श्री जगदीश तिवारी आदि ने भजन एवं गीतों में श्रीराम के जीवन चरित्र का बखान किया गया। दोनों कार्यक्रम का सफल संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

महर्षि दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय, फतेहनगर में व्यायाम प्रशिक्षण, चरित्र व संस्कार निर्माण शिविर १७ से २२ मई २०१४

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर व आर्यवीर दल सनवाड़-फतेहनगर के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय, फतेहनगर में आयोज्य इस शिविर में २०० छात्र-छात्राएँ भाग लेंगे।

ज्ञातव्यः- (१) पूर्णतया आवासीय शिविर (२) प्रवेश शुल्क रु. १५०/- प्रति शिविरार्थी (३) १६ मई रात्रि ८ बजे तक शिविर स्थल पर पहुँचना अनिवार्य (४) शिविरार्थी की आयु १२-३५ वर्ष

इच्छुक छात्र-छात्राएँ, विद्वान् १० मई तक सूचना देवें।

ईमानदारी ही आनन्दमय जीवन की कुंजी है।

आचार परमो धर्मः

– श्रीमती अरुणा सतीजा

परमपिता परमात्मा ने प्रकृति से सुसज्जित सुन्दर सृष्टि का निर्माण कर अपने प्रिय मानव को सौंप दी। क्योंकि मानव ही श्रेष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ एवं सदाचारी प्राणी है जो ईश्वर की इस अद्‍भुत रचना को विस्तृत स्वरूप दे सकता है। मानव मन असीम शक्तियों का भण्डार है। उसमें बुद्धि है, विवेक है, वह तेज एवं बल का धनी है। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होने वाले विभिन्न प्रकार के आश्चर्यजनक आविष्कार इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। छोटे से मोबाइल फोन का विश्लेषण कर के देख लो।

मानव एक विशाल सागर है। जिस प्रकार सागर में विभिन्न प्रकार के छोटे बड़े व भयंकर जीव जन्तु व वनस्पतियाँ हैं तथा उसके गर्भ में अनमोल मोती भी छिपे हैं। यह सब प्राप्त करने वालों की इच्छा पर निर्भर करता है कि वह मछुआरे बन मछलियाँ पकड़ते हैं या गहरे पानी पैठ मोती निकाल लाते हैं।

प्रतिदिन एक सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी की कहानी लगभग सभी ने सुनी होगी। क्या मुर्गी के पेट में असंख्य सोने के अण्डे थे? नहीं। फिर उस व्यक्ति ने मुर्गी के पेट को क्यों चीर डाला? इसका उत्तर देती है हमारी महान् संस्कृति।

वैदिक संस्कृति हमें आचार विचार तथा सद्‍व्यवहार का पाठ पढ़ाती है। सद्-आचार-विचार रहित मनुष्य पशु तुल्य है। तो फिर आज मानव 'नर-पशु' क्यों बन गया है। एक ओर चकित करने वाले आविष्कार तो दूसरी ओर भ्रष्टाचार, अनैतिकता तथा व्यभिचार- क्यों? क्योंकि -ईमान' खत्म हो गया है। आज मानव मन ईमानदारी से क्यों शून्य है?

ईमानदारी क्या है? ईमानदारी कोई वस्तु नहीं है परन्तु मानव मन की शुद्ध भावनाओं का रूपान्तरण है।

वेद भी यही कहते हैं। 'मनुर्भव' हे मानव तू मानवीय गुणों को धारण कर। अफसोस आज मानव ने बेईमानी का दामन थाम लिया है। क्यों? इसका मूल कारण है- अविद्या- अर्थात् असत्य को सत्य मानना। क्योंकि मानव उस महान् सत्ता को जिसे ईश कहते हैं आज भुला चुका है। आज मनुष्य को चकाचौंध करने वाले भौतिक सुख आकर्षित कर रहे हैं। उसे इस जीवन के उस पार कुछ भी दिखाई नहीं देता। जिस प्रकार एक शराबी को शराब पीने के बाद सुखमय जीवन की अनुभूति होती है परन्तु नशा उतरने के बाद बर्बादी, ठीक उसी प्रकार मानव बेईमानी के दलदल में धँसता जा रहा है। पद और धन लोलुपता जीवन का लक्ष्य बन गये हैं। लोग रातों रात कुबेर बनने के सपने लेने लगे हैं। जिसका परिणाम है जीवन के हर क्षेत्र में बेईमानी ही बेईमानी। इसके परिणामों को देखकर रूह(आत्मा) काँप उठती है। मानव की सेवा करने वाले देवता तुल्य डाक्टर मरीज की किडनी, आँख व रक्त जैसे अमूल्य अंगों के सौदागर बन गये हैं। दवाईयों तथा खाद्य पदार्थों जैसी जीवनदायिनी वस्तुओं में मिलावट के कारण लोग भयंकर तथा असाध्य रोगों के शिकार हो रहे हैं। मानव भूल जाता है कि अगर वह नकली व विषैली दवाईयाँ बनाकर दूसरों के जीवन से खिलवाड़ कर रहे हैं तो कोई और भी है जो खाद्य पदार्थों में मिलावट कर उन्हें मौत के मुँह में धकेल रहा है। पवित्रता के प्रतीक साधु सन्त भी अपने स्वार्थ के लिए लोगों को अन्धविश्वासों के अंधे कुएँ में धकेल रहे हैं। एक साधारण चपरासी से लेकर देश के कर्णधार तक बेईमानी के शिकार हैं। इसीलिए कोई भी किसी को कुछ भी कहने का हकदार नहीं है। इसका अर्थ नहीं कि कोई भी व्यक्ति चरित्रवान, सदाचारी व ईमानदार है ही नहीं। ऐसा कभी किसी भी युग में नहीं होता। अच्छाई और बुराई का तो चोली दामन का साथ है मात्र अन्तर होता है अनुपात का, संख्या का।

आज बेईमानी अपनी चरम सीमा को छू रही है। प्रकृति का नियम है कि कोई भी वस्तु कितनी भी ऊँचाई पर क्यों न जाए अन्त में नीचे लौट कर आती है। अब समय आ गया है चिन्तन व मनन का। बेईमानी से हम ने क्या पाया क्या खोया। मानव जीवन के मूल लक्ष्य आनन्दमय जीवन से कितने दूर हो गए? आज आवश्यकता है अपने गौरवमय इतिहास के पन्नों को उलटने की। भारतीय जीवन का इतिहास तो गौरवमयी जीवनियों से भरा पड़ा है। एक एक विभूति का जीवन एक ज्वाला है जिसमें प्रज्ज्वलित करने की असीम शक्ति है। मानव भूल गया है कि जीवन का एक उज्ज्वल पक्ष भी है जिसका दरवाजा आनन्दमय जीवन की ओर खुलता है।

ईमानदारी के मुख्य स्तम्भ हैं- सत्यमय जीवन एवं कर्तव्य पालन- 'यज्ञमय जीवन' यज्ञमय जीवन का अर्थ है अगर डाक्टर हो तो रोगी की सेवा कर उसे प्राण दान करो, अध्यापक हो तो बच्चों का निर्माण कर राष्ट्र को चरित्रवान नागरिक दो, माता पिता हो तो आज्ञाकारी एवं सेवाभावी सन्तति का निर्माण करो, राजनायक हो तो राज्य को उन्नति के शिखर पर ले जाकर चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना करो, अगर तुम महापुरुष हो तो लोगों को सत्यमय जीवन की राह बताओ। एक ईमानदार कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति ईश्वर की सर्वोत्तम रचना है।

१९४९ में सी.वी.रमन ने अपनी संस्था के लिए असिसटेन्ट पद

का विज्ञापन दिया। बहुत से उम्मीदवार साक्षात् के लिए आये। एक युवक असफल रहने के बाद भी ऑफिस के बाहर खड़ा दिखाई दिया। रमन जी के पूछने पर उसका उत्तर था 'सर मैं जानता हूँ कि मेरा सलेक्शन नहीं हुआ परन्तु मैं यहाँ आपके संस्थान की ओर से दिया गया यात्रा खर्चा लौटाने के लिए खड़ा हूँ। यह सुन रमन जी आवाक रह गये। उनके मुँह से निकला तुम्हारा सलेक्शन हो गया। तुम्हारी फिजिक्स भले कमजोर हो, वह मैं तुम्हें सिखा दूँगा। मेरे लिए अधिक महत्वपूर्ण है कि तुम एक चरित्रवान व्यक्ति हो। यह सत्य कथन है कि एक ईमानदार नौकर खजाने की चाबी प्राप्त करता है जबकि बेईमान पुत्र को उसे छूने की आज्ञा नहीं होती।

यदि कोई व्यक्ति बलवान हो, धनवान हो, विद्वान् हो, बुद्धिमान हो परन्तु आचारवान न हो तो उसका जीना मृत्यु से भी बढ़कर है क्योंकि मृत व्यक्ति कोई कुकर्म नहीं करता।

ईमानदार व्यक्ति की जीवन क्रियाएँ उदाहरण बन मरणोपरान्त भी प्रेरक होती हैं। बेईमानी का दोस्त है झूठ। जो व्यक्ति बेईमान होगा व झूठा भी होगा। ईमानदार बनो, प्रलोभनों में मत फँसो। यह मानव विनाश की सीधी गली है।

एक विद्वान् ने सच ही कहा है कि जिस प्रकार मकान के लिए छत की, अन्धे व लंगड़े के लिए लाठी की, कुएँ के लिए पानी, लेखन के लिए लेखनी की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मनुष्य के लिए ईमान की आवश्यकता होती है।

राष्ट्र के श्रेष्ठ पुरुषो, पवित्र आत्माओ उठो, जागो औरों को जगाओ। बेईमानी को छोड़ने और ईमानदारी को धारण करने का संकल्प दोहराओ। कहीं देर न हो जाए और जीवन व्यर्थ में नष्ट हो जाए। संसार में ईमान ही सर्वोत्तम धन है।

आज देश को पुनर्जागरण की आवश्यकता है। आओ सभी मिलकर श्री कृष्ण तथा महर्षि स्वामी दयानन्द की तरह एक बार पुनः वैसा शंखनाद करें कि जन-जन के हृदय में शुद्धता, पवित्रता तथा सत्यता की शहनाई गूँज उठे। राष्ट्र में पुनः जागरण हो। हर मन शान्त हो। क्योंकि मन शान्त होता है तो बाहर का सारा वातावरण शान्तिमय दिखाई देता है। मंत्रों में जादुई शक्ति होती है। वेदमंत्र द्वारा शांति की प्रार्थना करें।

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥

– यजु. ३६/१७

फ्लैट नं. १०१, सौम्या इनक्लेव, बी-९ ध्रुव मार्ग, तिलक नगर
जयपुर (राज.) पिन ३०२००४, मोबाइल ०९४६०१८३८७३

नवलखा महल (सत्यार्थ प्रकाश भवन) एक परिचय

यह भवन है, विश्वविख्यात् पर्यटन-स्थल, झीलों की नगरी, उदयपुर के हृदय स्थल में अवस्थित गुलाबबाग में, युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द की स्मृति को संजोए, पवित्र आकर्षक स्मारक, नवलखा महल। जहाँ मेवाड़ नरेश महाराणा सज्जन सिंह जी के निमंत्रण पर लगभग साढ़े छः मास विराजकर महर्षिवर दयानन्द सरस्वती ने कालजयी ग्रन्थरत्न सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन सम्पूर्ण किया। जिसे श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास ने भव्यतम आकर्षक रूप प्रदान कर वैदिक धर्म (भारतीय संस्कृति) के प्रचार का एक अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र बनाने का प्रयास किया है।

प्रमुख आकर्षण–

१. भव्य सत्यार्थ प्रकाश कक्ष- सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को प्रदर्शित करता, पूर्ण रूपेण काँच का बना, भव्य, १४ खण्डीय, सेन्सर से घूमता हुआ आकर्षक सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ।

२. 'आर्यावर्त्त' चित्र दीर्घा- सृष्टि के आरम्भ से महर्षि दयानन्द पर्यन्त महामनाओं के व्यक्तित्व एवं कृतित्व दर्शाती है। रामायण, महाभारत सहित विभिन्न कालों के स्वाधीनता संग्रामों में बलिदान देने वाले देशभक्तों, ऐतिहासिक महापुरुषों की जीवन गाथाओं पर आधारित भव्य तैलीय चित्र। घूमती रेक्स में सत्यार्थ प्रकाश के सभी २३ भाषाओं में उपलब्ध अनुवादों का प्रदर्शन।

३. भव्य सत्यनारायण गुलाबी देवी लाहोटी यज्ञशाला जिसके प्रांगण में ५०० व्यक्तियों के बैठने की क्षमता।

४. प्रभु भक्ति एवं महर्षि महिमा के गीतों की धुनों पर थिरकते रंगीन आभा बिखरते फब्बारे।

५. भव्य वातानुकूलित माता लीलावन्ती सभागार में 'ऋषि दर्शन' मंत्रमुग्ध कर देने वाला दृश्य-श्रव्य कार्यक्रम।

६. 'कैप्टन देवरत्न आर्य' पुस्तकालय एवं वाचनालय।

७. न्यास के प्रेरणास्त्रोत एवं आजीवन अध्यक्ष स्मृतिशेष स्वामी तत्वबोध सरस्वती (पूर्वनाम-हनुमान प्रसाद चौधरी) की साधना स्थली 'साधना सदन'।

८. महर्षि दयानन्द-जीवन यात्रा-मानचित्र

९. वैदिक सत् साहित्य विक्रय केन्द्र

कतिपय गतिविधियाँ–

१. दैनिक यज्ञ- वेद मंत्रों से वातावरण को पवित्र करते हुए संध्या, हवन एवं सत्यार्थ प्रकाश कथा (अप्रैल से अक्टूबर- प्रातः ७.00 बजे एवं सायं ६.०० बजे, नवम्बर से मार्च- प्रातः ७.३० बजे एवं सायं ५.३० बजे)

२. मासिक सत्संग- प्रत्येक माह का प्रथम रविवार- अप्रैल से अक्टूबर सायं ६.00 बजे एवं नवम्बर से मार्च सायं ५.३० बजे)

३. सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव- वर्ष में एक बार

४. वैदिक साहित्य प्रकाशन- सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, सत्यार्थ प्रकाश कवितामृत, दयानन्द दर्शन, सत्यार्थ दर्शन, वैदिक संस्कृति एक सरल परिचय आदि।

५. मासिक पत्रिका प्रकाशन- सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आंचल में समेटे सम्पूर्ण परिवार व हर आयु वर्ग के लिए पठनीय और समर्पित पत्रिका- ''सत्यार्थ सौरभ'' { आर्य जगत् की सर्व प्रमुख पत्रिकाओं में विशिष्ट पहचान बना लेने वाली}

६. वैदिक साहित्य विक्रय केन्द्र- जीवन निर्माणोपयोगी सत्साहित्य, वीसीडी, केसेट आदि उपलब्ध।

७. संस्कार शिविर- प्रतिवर्ष बालक-बालिकाओं में संस्कार रोपण हेतु शिविर का आयोजन।

८. संस्कार-व्यवस्था- नगर में गृह प्रवेश, व्यापार शुभारम्भ, जन्म दिवस आदि पर विशुद्ध वैदिक रीति से यज्ञ, सभी १६ संस्कार सम्पन्न कराने की पूर्ण व्यवस्था। सम्पर्क करें दूरभाष- 2417694, चलित दूरभाष- 09314535379 (पुरोहित) 09829063110 (व्यवस्थापक)।

९. स्वामी तत्वबोध सरस्वती स्मृति दिवस समारोह आयोजन प्रतिवर्ष- २३ जुलाई

१०. सत्यार्थ प्रकाश On Line Test (वर्ष में तीन बार)- आर्यरत्न डॉ. ओम प्रकाश आर्य (म्यांमार) स्मृति पुरस्कार ५१००/- रु.

११. न्यास वेबसाइट- ww.satyarthprakashnyas.org पर न्यास से प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश, मासिक पत्रिका- सत्यार्थ सौरभ के अतिरिक्त न्यास की गतिविधियाँ उपलब्ध।

१२. सत्यार्थ प्रकाश पहेली- प्रभु नाम स्मरण प्रतियोगिता प्रतिमाह।

१३. सत्यार्थ दूत पुरस्कार। (सत्यार्थ प्रकाश- शिक्षाओं के सम्प्रेशन में सर्वाधिक योगदान देने वाले को)

१४. सत्यार्थ सारथी पुरस्कार (प्रयोजक- स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती, पिण्डवाड़ा)। (प्रतिवर्ष सर्वाधिक सत्यार्थ प्रकाश क्रय करने वाले को)

सत्यार्थ-पीयूष

बाल-विवाह निषेध

वैदिक स्वर्ग के अभिलाषी स्त्री व पुरुष को गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने से पूर्व न केवल अपने शरीर को स्वस्थ, बलवान तथा वीर्यवान बनाना होता है, प्रत्युत अपने आत्मा तथा मन को भी बलवान और पवित्र बनाकर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहिए। युवक-युवतियों को बुद्धिमान, मेधावी, शिक्षित तथा विद्वान् होने के साथ-साथ चारों आश्रमों के शिरोमणि इस गृहस्थ आश्रम को सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिए बड़े प्रयत्न की आवश्यकता रहती है। इसीलिए महर्षि मनु महाराज जी का कथन है- ''स संधार्यः- प्रयत्नेन'' अर्थात् इस गृहस्थाश्रम को बड़े प्रयत्न से धारण करो। शतपथ ब्राह्मण में आदेश है-

''ब्रह्मचर्याश्रमं समाप्य गृहीं भवेत्'' अर्थात् ब्रह्मचर्य को समाप्त करके गृहस्थ में प्रवेश करें। ब्रह्मचर्य अगले पड़ाव-गृहस्थाश्रम के लिए तैयारी की आश्रम है। अब्रह्मचारी को गृहस्थाश्रम में प्रवेश का अधिकारी नहीं बतलाया गया है। इसीलिए गृहस्थाश्रम में प्रवेश के लिए महर्षि दयानन्द प्राचीन ऋषि मनु को उद्धृत करते हुए लिखते हैं -

वेदानधीत्य वेदौ वा वेदं वाऽपि यथाक्रमम्।
अविलुप्तब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममाविशेत्॥ मनु. ३/२

अर्थात् ''यथावत् ब्रह्मचर्य में आचार्यानुकूल वर्त्तकर, धर्म से चारों, तीन वा दो अथवा एक वेद को सांगोपांग पढ़ के जिसका ब्रह्मचर्य खण्डित न हुआ हो, वह पुरुष वा स्त्री गृहाश्रम में प्रवेश करे।'' सत्यार्थ प्रकाश ४ समुल्लास

ब्रह्मचर्य की अवधि के बारे में छान्दोग्योपनिषद् प्रपाठक ३ खण्ड १६ में लिखा है-

''पुरुषो वाव यज्ञस्तस्य यानि चतुर्विंꣳशति वर्षाणि तत्प्रातः सवनं चतुर्विंꣳशत्यक्षरा गायत्री गायत्रं प्रातःसवनं तदस्य वसवोऽन्वायत्ताः प्राणा वाव वसव एते हीदꣳ सर्वं-वासयन्ति''।

अर्थात् वसु- ब्रह्मचारी २४ वर्ष की आयु तक, रुद्र ब्रह्मचारी ३६ आयु तक तथा आदित्य ब्रह्मचारी ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन कर सकता है। अगर कोई आजन्म ब्रह्मचारी रहना चाहता है तो वह रह सकता है। परन्तु उसके लिए व्यक्ति को पूर्ण विद्यावान, जितेन्द्रिय, योगी होना जरूरी है क्योंकि ऋषि दयानन्द ने स्वयं लिखा है-

''यह बड़ा कठिन काम है कि जो काम वेग को थांभ के इन्द्रियों को अपने वश में रखना''। – सत्यार्थ प्रकाश ३ समुल्लास

अतः धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष रूपी पुरुषार्थ चतुष्ट्य की सिद्धि के लिये युवक-युवतियों को ब्रह्मचर्य की अवधि समाप्त होने पर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहिये।

विवाह योग्य कन्या के बारे में स्वामी दयानन्द महर्षि मनु का प्रमाण देते हुए लिखते हैं -

त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत कुमार्युतुमती सती।
उर्ध्वं तु कालादेतस्माद्विन्देत सदृशं पतिम्॥ -मनु. ९/९०

कन्या रजस्वला हुए पीछे तीन वर्ष पर्यन्त पति की खोज करके अपने तुल्य पति को प्राप्त होवे। जब प्रतिमास रजोदर्शन होता है तब तीन वर्षों में ३६ बार रजस्वला हुए पश्चात् विवाह करना योग्य है, इससे पूर्व नहीं। - सत्यार्थ प्रकाश ४ समुल्लास

वयस्क कन्या ही गृहस्थाश्रम में प्रवेश करे, इसमें वेद का प्रमाण है-

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्। -अथर्व. ११/५/१८

''जैसे लड़के ब्रह्मचर्य सेवन से पूर्ण विद्या और सुशिक्षा को प्राप्त होके युवती, विदुषी, अपने अनुकूल प्रिय सदृश स्त्रियों के साथ विवाह करते हैं वैसे (कन्या) कुमारी (ब्रह्मचर्येण) ब्रह्मचर्य सेवन से वेदादि शास्त्रों को पढ़ पूर्ण विद्या और उत्तम शिक्षा को प्राप्त युवती होके पूर्ण युवावस्था में अपने सदृश प्रिय विद्वान् (युवानम्) और पूर्ण युवावस्था युक्त पुरुष को प्राप्त होवे।'' - सत्यार्थ प्रकाश ४ समुल्लास

निकट सम्बन्ध निषेध

स्वामी दयानन्द, महर्षि मनु के वचन को उद्धृत करते हुए लिखते हैः-

असपिण्डा च या मातुरसगोत्रा च या पितुः।
सा प्रशस्ता द्विजातीनां दारकर्मणि मैथुने॥ -मनु. ३/५

अर्थात् ''जो कन्या माता के कुल की छः पीढ़ियों में न हो और पिता के गोत्र की न हो उस कन्या से विवाह करना उचित है।''
स्वामी दयानन्द ने स्पष्ट रूप से लिखा है कि निकट विवाह

करने में अनेक प्रकार की हानियाँ हैं। स्वामी जी के ही शब्दों में- ''जैसे पानी में पानी मिलने से विलक्षण गुण नहीं होता, वैसे ही एक गोत्र पितृ वा मातृकुल में विवाह होने में धातुओं के अदल-बदल नहीं होने से उन्नति नहीं होती है''। स्वामी जी की सोच में वैज्ञानिकता का पुट है। आज के प्रजनिक विशेषज्ञ इस सिद्धान्त से सहमत हैं।

विवाह दूर देश में होना चाहिए

शतपथ ब्राह्मण का वचन **'परोक्ष-प्रिया इव हि देवाः प्रत्यक्ष द्विषः'** उद्धृत करते हुए ऋषि दयानन्द लिखते हैं- ''यह निश्चित बात है कि जैसी परोक्ष पदार्थ में प्रीति होती है वैसी प्रत्यक्ष में नहीं।'' स्वामी जी दूर देश में विवाह करने के गुणों के बारे में लिखते हैं- ''दूर-दूर देश के वर्तमान और पदार्थों की प्राप्ति भी दूर संबंध होने में सहजता से हो सकती है, निकट विवाह होने में नहीं''। इसीलिए- **''दुहिता दुर्हिता दूरेहिता भवतीति''**- (निरुक्त- ३/४) में कहा है- कन्या का नाम 'दुहिता' इस कारण से है कि इसका विवाह दूर देश में होने से हितकारी होता है, निकट रहने में नही। -स.प्र. ४ समु.

बाल विवाह निषेध

१९वीं शताब्दी में भारत में नवजागरण तथा धार्मिक सुधार के जो आन्दोलन चले, उनमें बाल विवाह के विरोध पर भी समुचित ध्यान दिया गया। इसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती का कर्तृत्त्व सबसे अधिक महत्त्व का है। जब उन्होंने देखा कि छोटी-छोटी कन्याओं के विवाह हो जाते हैं, तब गृहस्थाश्रम के अधः पतन को देखकर उनका हृदय नारी जाति के प्रति दयार्द्र हो उठा। पूना प्रवचन (उपदेश मन्जरी) के १२ वें प्रवचन में वे कहते हैं- 'यदि इस समय हम लोगों में बाल विवाह प्रचलित न होता तो विधवाओं की संख्या कभी इतनी न होती और न इतने गर्भपात और इतनी भ्रूण हत्याएँ होतीं'। बाल विवाह का प्रबल रूप में स्वामी जी ने विरोध किया, और यह कहा कि 'जिस देश में ब्रह्मचर्य विद्याग्रहण रहित बाल्यावस्था और अयोग्यों का विवाह होता है वह देश दुःख में डूब जाता है।' (सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास)

उस समय के तथाकथित पण्डित लोग बाल विवाह के समर्थन में पाराशरी और शीघ्रबोध जैसे अर्वाचीन ग्रन्थों के प्रमाण देते थे। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में इनका प्रबल खण्डन किया है। स्वामी जी ने स.प्र. ४ समु. एवं संस्कार विधि में कई वेदमंत्र यह प्रमाणित करने के लिए दिये कि युवावस्था में ही विवाह होने से वैदिक स्वर्ग की प्राप्ति संभव है न कि बाल्यावस्था में विवाह करने से सुख होता है। यथा-

युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उ श्रेयान्भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः॥
ऋग्वेद ३/८/४

''जो पुरुष सब ओर से यज्ञोपवीत, ब्रह्मचर्य सेवन से उत्तम शिक्षा और विद्या से युक्त सुंदर वस्त्र धारण किया हुआ ब्रह्मचर्य युक्त पूर्ण जवान होके विद्याग्रहण कर गृहाश्रम में आता है वही दूसरे विद्या जन्म प्रसिद्ध होकर अतिशय शोभायुक्त मंगलकारी होता है, अच्छे प्रकार ध्यान युक्त विज्ञान से विद्यावृद्धि की कामनायुक्त धैर्ययुक्त विद्वान् लोग उसी पुरुष को उन्नतिशील करके प्रतिष्ठित करते हैं और जो ब्रह्मचर्यधारण, विद्या उत्तम शिक्षा का ग्रहण किये बिना अथवा बाल्यावस्था में विवाह करते हैं, वे स्त्री पुरुष नष्ट भ्रष्ट होकर विद्वानों में प्रतिष्ठा को प्राप्त नहीं होते।''

''....... बाल्यावस्था में विवाह से जितना पुरुष का नाश, उससे अधिक स्त्री का नाश होता है''

ऋ. ३/५५/१६ के भाष्य में, स. प्र. ४ समु.।

स्वामी दयानन्द ने लिखा है- ''सोलहवें वर्ष से लेके चौबीसवें वर्ष तक कन्या और पच्चीसवें वर्ष से लेके अड़तालीसवें वर्ष तक पुरुष का विवाह समय उत्तम है। इसमें जो सोलह और पच्चीस में विवाह करे तो निकृष्ट, अठारह-बीस की स्त्री, तीस-पैंतीस वा चालीस वर्ष के पुरुष का मध्यम, चौबीस वर्ष की स्त्री और अड़तालीस वर्ष के पुरुष का विवाह होना उत्तम है।'' - सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास

स्वामी दयानन्द ने वेद भाष्य करते समय अनेक मंत्रों का भाष्य बाल विवाह निषेध परक किया है। उनमें से प्रमाण स्वरूप कुछ मंत्रों के भाष्य उद्धृत हैं- ''सुख पाने की इच्छा करने वाले पुरुष और स्त्रियों को धर्म से सेवित ब्रह्मचर्य से, पूर्ण विद्या और युवावस्था को प्राप्त होकर अपनी तुल्यता से ही विवाह करना योग्य है अथवा ब्रह्मचर्य में ही ठहर कर सर्वदा स्त्री-पुरुषों को अच्छी शिक्षा करना योग्य है क्योंकि तुल्य गुण, कर्म स्वभाव वाले स्त्री-पुरुषों के बिना गृहाश्रम को धारण करके कोई किचिंत् सुख वा उत्तम सन्तान को प्राप्त होने में समर्थ नहीं होते, इससे इसी प्रकार विवाह करना चाहिए।'' -ऋग्वेद १/११२/१९

''राजपुरुषों को चाहिए कि अपने व प्रजा के बालकों, कुमार और गौ, घोड़े आदि वीर उपकारी जीवों की कभी हत्या न करें और बाल्यावस्था में विवाह कर व्यभिचार से अवस्था की हानि भी न करें।''- यजुर्वेद १९/१९

महर्षि दयानन्द बाल विवाह को इतना अधिक हानिकारक मानते थे कि उन्होंने इस प्रथा को रोकने के लिए राजशक्ति के प्रयोग का भी परामर्श दिया है। राजसभा द्वारा जिन प्रयोजनों के लिए कानून बनाने चाहिए, उनमें महर्षि ने बाल्यावस्था में विवाह रोकना भी सम्मिलित किया है।

(ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन पृष्ठ २५/२३)

स्वामी दयानन्द के शिष्य व आर्य समाज के स्तम्भ स्व. श्री हरविलाश शारदा जी के प्रयत्न से सन् १९२९ ई. में बाल विवाह विरोधी कानून भारत सरकार ने पारित किया जिसे शारदा एक्ट के नाम से भी जाना जाता है। आज ''हिन्दू विवाह अधिनियम' के अन्तर्गत २१ वर्ष से कम आयु के पुरुष व १८ वर्ष से कम आयु की स्त्री का विवाह अवैध है।''

- संपादक- अशोक आर्य

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव
११, १२ अक्टूबर २०१४
भाग लेने हेतु
अभी से मानस बनावें

विटामिन-डी की कमी जानलेवा

विटामिन डी की कमी एक आम समस्या है, लेकिन ज्यादातर लोगों को इसकी पर्याप्त जानकारी नहीं है। इसकी कमी के लक्षण आमतौर पर बहुत विलम्ब से पता चलते हैं। विटामिन डी की कमी का कारण अपर्याप्त किरणें भी हैं। महिलाओं में आजकल धूप में निकलते समय स्कार्फ कोट और सन स्क्रीन लोशन लगाने का चलन बढ़ा है।

इसके अलावा ऑफिस में ए.सी. रूम में बैठकर घंटों काम करने का चलन भी बढ़ा है। इन सब के कारण महिलाओं और पुरुषों में भी विटामिन डी की कमी देखने को मिल रही है। शरीर में विटामिन डी की कमी को लोग हल्के में लेते हैं। लेकिन उनको इस बात का आभास तक नहीं होता है कि इससे उनकी जान भी जा सकती है। वहीं कुछ लोग सोचते हैं कि अपने देश में अच्छी धूप से शरीर में विटामिन डी की कमी नहीं हो सकती है जबकि ऐसा नहीं है। हालिया रिपोर्ट के अनुसार उत्तर भारत में लगभग ३० प्रतिशत से अधिक आबादी विटामिन डी की कमी से ग्रस्त है। इनमें बच्चे बुजुर्ग और महिलाएँ ज्यादा हैं। विटामिन डी की कमी से महिलाओं और बुजुर्गों में आस्टियोमलेशिया और बच्चों में रिकेट्स की बीमारी होना सभी जानते हैं लेकिन हाल की रिपोर्ट से पता चलता है कि इसकी कमी से बच्चों में अस्थमा और गर्भवती महिलाओं के शिशुओं की प्रतिरोधक क्षमता बहुत कम होती है। इससे उसके बचने की संभावना कम हो जाती है। बुजुर्गों में विटामिन डी की कमी से हड्डी टूटने की आशंका बढ़ जाती है। अक्सर देखा गया है कि गिरने की वजह से बुजुर्गों के कूल्हे टूट जाते हैं जो जानलेवा भी साबित होता है। जरूरत है कि खान-पान सही रखें। शरीर में कैल्शियम की मात्रा सन्तुलित रखें। विटामिन डी की भी नियमित जाँच करानी चाहिए। विटामिन डी की कमी को लोग गठिया समझ लेते हैं और वे गठिया का इलाज करवाते हैं। ऐसे में जाँच के बाद ही इलाज शुरू करें।

विटामिन डी

विटामिन डी शरीर में पाया जाने वाला तत्व है यह शरीर में पाये जाने वाले सेवन हाइड्रक्सी कोलेस्ट्रॉल और अल्ट्रावायलेट किरणों की मदद से बनता है। इसके साथ ही शरीर में रसायन कोलिकल कैसिरॉल पाया जाता है जो खाने के साथ मिलकर विटामिन डी बनाता है। शरीर में विटामिन डी का मुख्य काम कैल्शियम बनाना है। यह आँतों से कैल्शियम को एब्जॉर्ब कर हड्डियों में पहुँचाता है। साथ ही हड्डियों में संचित करने में भी मदद करता है। इसकी कमी से मांसपेशियों में भी दर्द होने लगता है।

कमी के लक्षण

थकान महसूस होना, बुढ़ापे में गिरने की संभावनाओं का बढ़ जाना, बच्चों की हड्डियों का टेढ़ा हो जाना, हड्डियों और मांसपेशियों में दर्द रहना और कूल्हे के पास दर्द। महिलाओं में कमर दर्द और यह दर्द गर्भावस्था के बाद ज्यादा होता है।

कारण विटामिन डी का मुख्य स्रोत सूर्य की किरणें हैं जो शरीर में जाने के बाद रिएक्शन कर विटामिन डी बनाती हैं जो लोग धूप में नहीं रहते या उनको किसी भी कारण धूप नहीं मिलती तो उनके शरीर में इसकी कमी हो जाती है। इसके अलावा सही खानपान का अभाव भी इसकी कमी का कारण है। खून में विटामिन डी की मात्रा २० मिलीग्राम प्रति मिलीलीटर से अधिक होनी चाहिए। इससे कम होना नुकसानदायक है।

विटामिन डी जाँच

यह जाँच मुख्यतः २५ हायड्रॉक्सी विटामिन डी के रूप में किया जाता है जो कि विटामिन डी मापने का सबसे अच्छा तरीका माना जाता है और एलिसा या कैल्टिमिसेंसनस तकनीक से टेस्ट लगाया जाता है।

बचाव

पौष्टिक खाना खाएँ शरीर में कैल्शियम की मात्रा सन्तुलित रखें। मांसपेशियों को मजबूत करने के लिए नियमित व्यायाम करें। धूप में कुछ समय बिताएँ अगर चेहरे पर धूप पड़ रही है तो पीठ खोलकर धूप सेक सकते हैं।

विटामिन डी के उत्पादन के लिए गोरी त्वचा को लगभग २० से ३० मिनट धूप की जरूरत होती है ओर गहरे रंग की त्वचा के लिए लगभग ४५ मिनट के समय की जरूरत होती है। इन सबसे विटामिन डी की कमी को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

इलाज और निदान

विटामिन डी की कमी की जाँच के लिए सीरम विटामिन डी की जाँच की जाती है। लोगों में विटामिन डी की जाँच को हेल्थ चेकअप स्कीम में शामिल किया है। इसकी कमी खून की जाँच से परखी जाती है। वैसे तो सूर्य की किरणें ही सबसे अधिक लाभदायक होती हैं लेकिन बाजार में अब कई दवाएँ आ गई हैं जो विटामिन डी की कमी को दूर करती हैं।

I wish I may die

कथा सरित

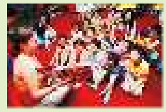

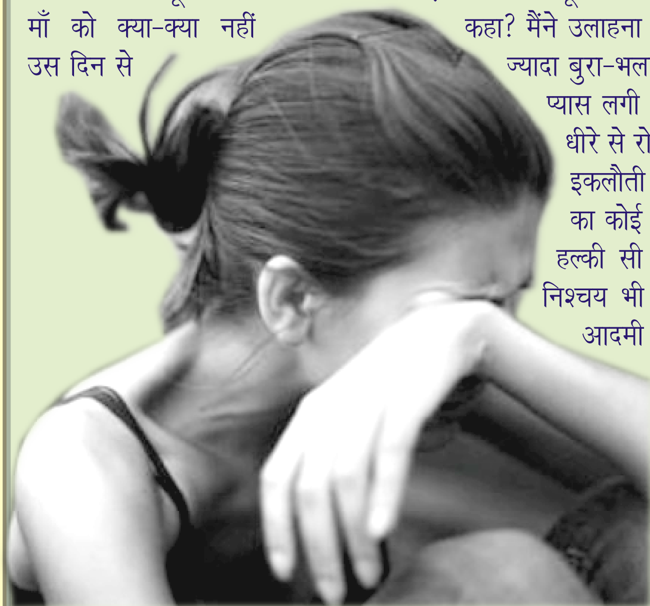

मुझे अपनी माँ कभी अच्छी नहीं लगी। उसकी एक ही आँख थी। मुझे वह अत्यन्त बदसूरत लगती थी। मैं नहीं चाहता था कि वह कभी मेरे स्कूल भी आवे। पर अचानक एक दिन वह स्कूल आ गयी। मैंने उसे तुरन्त घर जाने को कहा। घर जाकर मैंने माँ को क्या-क्या नहीं कहा? मैंने उलाहना दिया कि उसकी वजह से लड़के मुझ पर हँस रहे थे। उस दिन से ज्यादा बुरा-भला शायद ही मैंने उसे कभी कहा हो। उस रात जब मुझे प्यास लगी और मैं पानी पीने रसोई में गया तो देखा माँ अत्यन्त धीरे से रो रही थी शायद उसे डर था कि मैं जग न जाऊँ। उसकी इकलौती आँख से आँसू बह रहे थे। पर मैंने उसे सान्त्वना देने का कोई उपक्रम नहीं किया। न जाने क्यों दुबारा सोते हुए एक हल्की सी टीस हुयी पर मैंने उसे नजरअन्दाज कर दिया पर निश्चय भी कर लिया कि माँ से दूर रह कर मेहनत कर बड़ा आदमी बनूँगा। खण्डहर सा एक कमरे का मकान मेरे लिए नहीं था।

मैंने ऐसा ही किया। मैं बहुत धनाढ्य और प्रसिद्ध हो गया। शहर के जाने-माने लोगों में मेरी गिनती होने लगी। एक दिन एक प्रौढ़ स्त्री मेरे घर अचानक आ गयी। उसकी सूरत देख मेरी छोटी बच्ची डर गयी, चीख पड़ी। अरे ये तो एक आँख वाली मेरी माँ थी। मैं माँ पर क्रोध से उबल पड़ा कि उसने मेरी प्यारी बेटी को डरा दिया। माँ शान्तभाव से केवल इतना कहकर चली गयी कि शायद गलत पते पर आ गयी।

कुछ वर्ष बाद मेरे स्कूल में पुराने विद्यार्थियों का समारोह हुआ। मैं उसमें गया। बाद में जिज्ञासा के तौर पर खण्डहरनुमा मकान की ओर भी गया। वहाँ बाहर मेरी माँ पड़ी थी। वह मर चुकी थी। उसके हाथ में एक कागज था। मैं पढ़ने लगा। लिखा था- 'मेरे प्यारे बेटे! मुझे पता चला कि तुम स्कूल में आ रहे हो। मन तड़प रहा था कि मैं एक नजर तुम्हें देख लूँ। पर तुम्हें बुरा लगेगा इसी से नहीं गयी। बेटे ठीक ही है मैं बदसूरत तुम्हारे लिए अभिशाप ही बनी रही। तुमने ठीक किया कि मुझसे दूर रहे। पर मैं सदैव ईश्वर का धन्यवाद करती रही कि जब एक एक्सीडेण्ट में तुम्हारी एक आँख चली गयी तब मेरी एक आँख का प्रत्यारोपण तुम्हारी आँख में सफलता पूर्वक उसकी कृपा से हो गया। और आज तुम मेरी आँखों से सारी दुनिया देख रहे हो। सफलता के शिखर पर हो। इससे ज्यादा एक माँ क्या चाह सकती है। मुझसे दूर ही सही पर तुम सदा खुश रहो यही इस माँ की आखिरी इच्छा है।

पत्र पढ़कर मैं जैसे आसमान से गिर पड़ा। भूतकाल के सभी दृश्य जिनमें मैंने अपनी माँ से अकल्पनीय बुरा बर्ताव किया था, चित्रित होते चले गये। मैं विलख पड़ा, चीख पड़ा। **And at that time I realy wished I may die.**

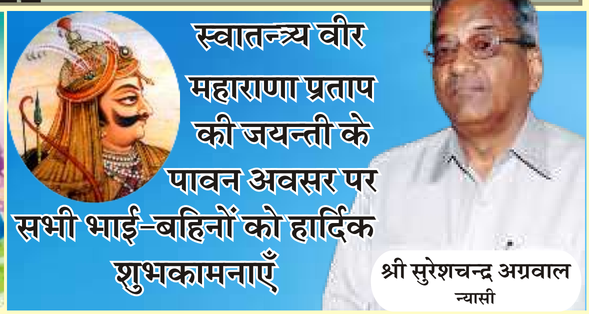

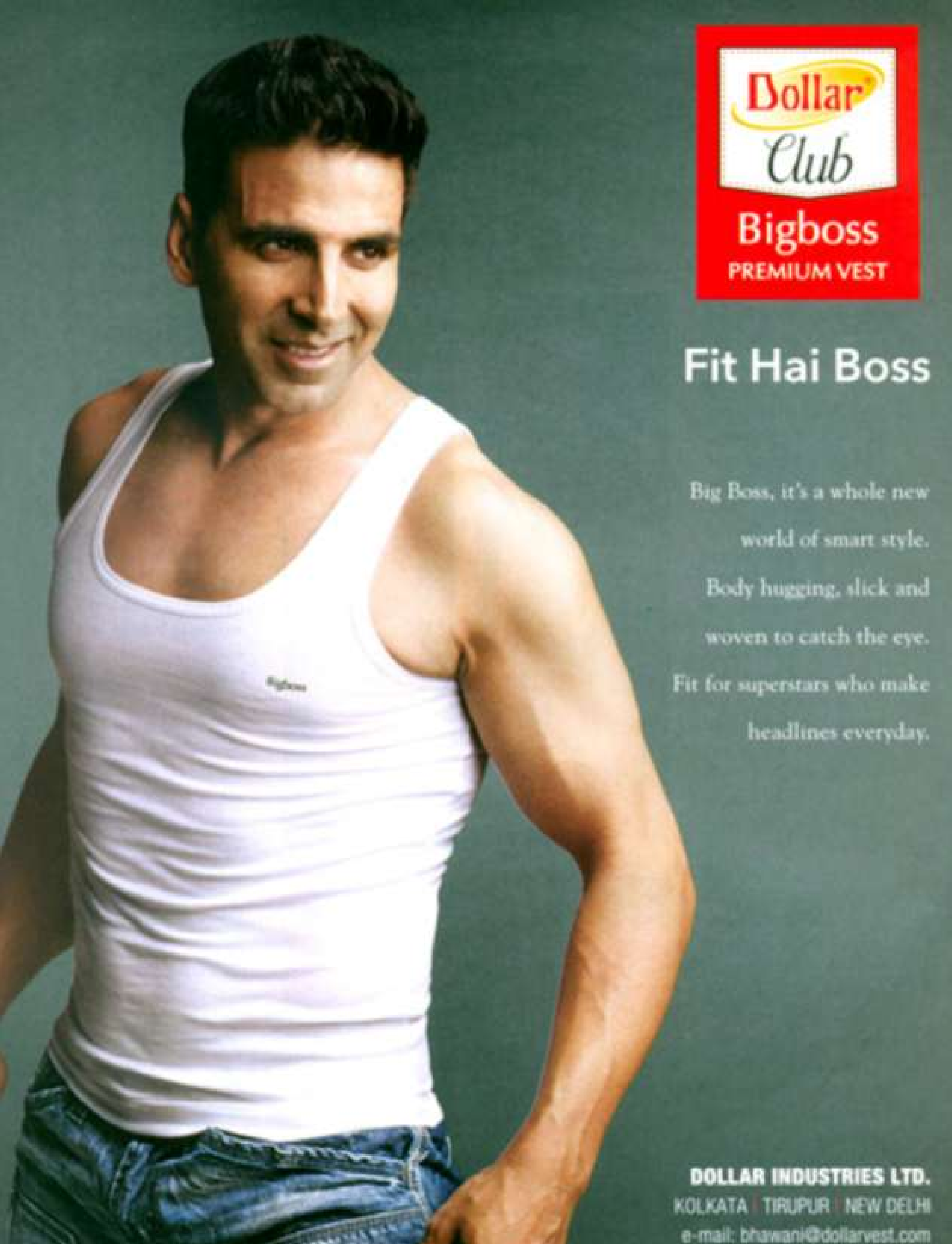

Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Big Boss, it's a whole new
world of smart style.
Body hugging, slick and
woven to catch the eye.
Fit for superstars who make
headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarvest.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 May-2014 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

भ्रष्टाचारी को दण्ड

जो राजपुरुष अन्याय से वादी-प्रतिवादी से गुप्त धन लेके पक्षपात से अन्याय करे उसका सर्वस्वहरण करके यथायोग्य दण्ड देकर ऐसे देश में रखे कि जहाँ से पुनः लौटकर न आ सके।

सत्यार्थप्रकाश- पृ.१७०

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य